Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ ओ३म् ॥

# सुख और शांति के लिए महापुरुषों के सद्विचार

दैनिक वैदिक प्रार्थनाएं, प्रार्थना भजन, आर्य समाज के प्रति महापुरुषों के विचार, आर्य समाज की मान्यताएं, महर्षि दयानन्द मन्तव्य, महर्षि के प्रति श्रद्धा—सुमन, नित्य पाठ गुटका तथा बारह माह मोतीराम का अनूठा संग्रह।

दिनां.........
पुस्तं.........

प्रकाशकः—

देवमुनि वानप्रस्थ (लालचन्द चोपड़ा)

४०४/ए, ब्लु डायमंड लिन्क रोड

मलाड (वेस्ट), बम्बई—४०००६४

मूल्य १० रुपये

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


## सप्रेम भेंट

तिथि

—देवमुनि वानप्रस्थ

१९९५ संस्करण ।

मुद्रक :
दी डान प्रेस (रजिस्टर्ड), कटड़ा शेर सिंह, अमृतसर । दूरभाष: 541312–220118

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# समर्पण

**स्वर्गीय श्रीमती लीलावन्ती**

(जन्म १९१४–निदान १९८४)

अपनी धर्मपत्नी की पुण्य स्मृति में यह पुस्तक वैदिक धर्म प्रचार हेतू आर्य बन्धुओं को सप्रेम भेंट । ईश्वर दिवंगत आत्मा को शान्ति, सद्गति प्रदान करें।

**देवमुनि वानप्रस्थ**
**(लाल चन्द चोपड़ा)**

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# आर्य समाज के नियम

1. सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उस की उपासना करने योग्य है।
3. वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है, वेद का पढ़ना–पढ़ाना और सुनना–सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।
6. संसार का उपकार करना इस समाज का उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार और यथायोग्य बर्तना चाहिए।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहकर सब की उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतंत्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतंत्र रहें।

## सत्यं वद, धर्मंचर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# प्रस्तावना

प्यारे भक्त! ईश्वर ने यह जन्म पुण्य कर्मों का फल दिया है। यदि यह अवसर खो दिया, जीवन को निष्फल गंवाया तो फिर उसका मिलना कठिन होगा। ईश्वर प्रेम और ईश्वर विश्वास से मनुष्य अपनी आत्मा को उन्नत कर सकता है और बलवान बना सकता है। ईश्वर को जानने से पहले अपने आप को जानना आवश्यक है, क्यों? इसलिये कि ईश्वर प्राप्ति इन इन्द्रियों के द्वारा नहीं हुआ करती। इन्द्रियों का झुकाव या सम्बन्ध तो बाहर के पदार्थों के साथ होता है इस लिए बाहर के विषयों के सिवा कुछ अनुभव नहीं कर सकतीं। इनके ब्रह्य ज्ञान को छोड़ कर आत्मा अन्तर्मुख होने से अपने आप को भी देख सकता है और अन्तरात्मा में व्यापक परमात्मा को भी जान सकता है, या दर्शन कर सकता है। जब तक आत्मा अपने आप को नहीं जान पाता, तब तक वह परमात्मा का साक्षात्कार कर ही नहीं सकता। इसलिये तो प्राचीन ऋषि मुनि विद्वान महात्मा आदिकाल से अपने आपको जान लेने का यत्न करते और शिक्षा देते चले आये हैं। जब हम विश्वासपूर्वक कहते हैं कि परमात्मा का हमें ज्ञान है तो केवल इतना ही अभिप्राय होता है कि हम ईश्वर को इतना ही जानते हैं जितना कि हमारे कल्याण के लिए आवश्यक है। परम पिता परमात्मा अनन्त है। इस लिए उनका पूरा–पूरा जान लेना मनुष्य की शक्ति के बाहर है। दयालु पिता-को जितना भी हम जान सकते हैं, उसके गुण, कर्म, स्वभाव जितने भी हमें प्यारे लगते हैं; उन सब गुणों का गान करना ईश्वर स्तुति कहलाती है। परमात्मा की स्तुति करने से हमारे आत्मा में उसके लिए प्रेम की ज्योति जाग उठेगी और उसके गुणों का प्रभाव हमारे आत्मा पर होगा।

अब मनुष्य का कर्त्तव्य हो जाता है कि प्रभु के उत्तम गुणों को अन्तरात्मा में धारण करें। इसके लिए आत्मिक बल की आवश्यकता है और

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


वह बल उस बलों के भण्डार परमात्मा से ही प्राप्त होगा। इस लिए आवश्यक है कि एकाग्रचित्त होकर एकान्त में बैठकर उस गुणसागर के गुण गान करने के पश्चात उससे आत्मिक बल की याचना करें। उसके दरबार में सच्चे मन से प्रार्थना करें। परन्तु यह याद रहे कि परमात्मा अपना प्रशंसा सुन कर और प्रार्थना को मानकर अपने न्याय नियम को नहीं छोड़ेगा। हमें अपने अच्छे, बुरे कुर्मों का फल अवश्य भुगतना पड़ेगा। प्रार्थना का भाव यही है कि हमें अपने आत्मा को दिन प्रतिदिन उन्नत और बलवान बनाएं और प्रार्थना के अनुकूल अपने जीवन को ढालने का यत्न करें। सच्चे मन से वेदोक्त धर्म को मन में धारण करें पुरुषार्थ करते हुए जहाँ भी विघ्न बाधाएं आयें वहां उत्साहपूर्वक प्रभु से बल मांगें।

हमारी प्रार्थनाएं गम्भीर और भावपूर्ण हों, भिखमंगों की तरह आलस्यभरी मांगे न हों। यदि हम सच्चे दिल से वेदोक्त प्रार्थना करेंगे तो वह दयालु पिता भक्त की टेर को अवश्य ही सुनेंगे, जिससे कि आने वाली रुकावटों के पहाड़ सहज में ही दूर और चकनाचूर हो जायेंगे। जब जब भी हमें पाप सतायें या हम अपने हृदय में निर्बलता पायें, तब तब ही प्रभु से प्रार्थना करें कि हे परम पिता प्रभो ! हमारी रक्षा करो ! हम तेरी ही ही भक्ति में सर्वदा तत्पर रहें। हम तेरे ही तो हैं और सदा तेरे ही रहेंगे। हमें ऐसा ऐश्वर्य दीजिए जिससे हमारा प्रभाव बढ़े; और अति बलवान वीर पुरुष हमारे सहायक हों। ऐ वरने योग्य परम देव ! हम आपके समीप होकर उन्नत हो सकें जैसे जल की नदी नष्ट नहीं होती, चलती है और निरन्तर चलती रहती है, इसी तरह हमारी बुद्धि भी कभी नष्ट न हो, ब्रह्म ज्ञान में निरन्तर चलती ही रहे।

ऐसी प्रार्थना द्वारा मनुष्य का जगत पति से गूढ़ सम्बन्ध होता है और प्रार्थना द्वारा ही जगत्पति से प्रीति और उसके प्रेम का प्रकाश होता है। प्रार्थना मनुष्य को देवता पद पर पहुंचा देती है और उसके जीवन और मृत्यु

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को सुन्दर बना देती है। प्रार्थना का ही फल है कि निर्बल मनुष्य हँसते–हँसते धर्म के लिये अपने आपको बलिदान करता है और अपने इस अद्वितीय बलिदान से लाखों करोड़ों निर्बल मनुष्यों को धर्म के मार्ग पर डाल देता है। ऐसी उच्च कोटि की प्रार्थना के साथ ही साथ यदि हम अपने जीवन को उसके अनुकूल बनाने का यत्न करेंगे तो निस्सन्देह हमारी प्रार्थना स्वीकार होगी और हमारा जीवनोद्देश्य पूर्ण होगा। परमात्मा कृपा करें कि जिससे सब नर–नारी वेदोक्त प्रार्थना द्वारा अपनी आयु को बढ़ायें। अपने आत्मा, मन और शरीर को बलवान बना कर अपना और प्राणीमात्र का कल्याण कर सकें।

—अमृतानन्द सरस्वती

दुःख सहना मां बाप की खातिर,
फ़र्ज़ है एहसान नहीं।
कर्ज है इनका तेरे सिर पर,
भिक्षा या कोई दान नहीं।
माता पिता के चरण छुए जो,
चार पदार्थों का फल पावे !
जो आशीष यह दिल से देवे,
निष्फल वें कभी न जावे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# परमात्मा के अनन्त नाम

परमात्मा अनन्त है। वह अपार है। उसका कोई भी पारावार नहीं पा सकता ? उसके गुण और कर्म भी अनन्त हैं। परमात्मा के इतने नाम हैं कि हमारी निर्बल लेखनी और वाणी में यह सामर्थ्य नहीं कि हम उनका वर्णन कर सकें। स्वामी दयानन्द जी महाराज ने सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास में इन अनन्त नामों में से एक सौ नामों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया है जिनको संक्षेप से नीचे लिखा जाता है।

'ओ३म' परमात्मा का निज नाम है। वेदादि सत्शास्त्रों ने इस नाम की बहुत ही महिमा गाई है और 'ओ३म' नाम के चिन्तन को सर्वोत्तम माना है। इसके अतिरिक्त सच्चिदानन्द स्वरूप, नित्य शुद्ध बुद्ध मुक्त स्वभाव, अनुपम, ब्रह्मा, विष्णु, शिव, शक्ति, महादेव, इन्द्र, धर्मराज, यम, काल, अगम, अगोचर, अपार, सर्वाधीश, सर्वस्वामिन्, निर्विकार, परमेश्वर, परमात्मन, पारब्रह्म, सर्वव्यापक, सर्वाधार, अग्नि, वायु, सूर्य, चन्द्र, आकाश, सूक्ष्म अच्छेद, अभेद, अजर, अमर, निर्भय, निर्बन्धन, निगुण, अमूर्त, विश्वपात, मंगल, बुद्ध, बृहस्पति, अतुल्य, मंगलस्वरूप, ज्ञानस्वरूप, धर्मस्वरूप, तेजस्वरूप, अमृतस्वरूप, निराकार, जगदादिकारण, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, जगदीश, सनातन, करूणानिधान, सर्वमंगलमय, परम सहायक, सकल दुःखविनाशक, ज्ञानप्रकाशक, परमेश्वर, पापियों के त्राता, निर्मल, सुखदायक, सर्वान्तर्यामी, सद्गुरू परमगुरु, आदिरोग रहित, इच्छा रहित, दीनदयाल, परमसुखदायक, कृपालु, दयालु अरूप, अनूप, अनादि, अगाध, अशोक, मोक्षदाता, शत्रुविनाशक, सर्वबलदायक, अन्न–दाता, विश्वपालक, प्रजापति, धर्मरक्षक, पक्षपात रहित, न्यायकारी, सकलजगदुत्पादक, अजन्मा, नसनाड़ी के बन्धन से रहित, मृत्यु रहित, परमात्मा और प्रभु के असंख्य नाम हैं ज़ो सब के सब सार्थक हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


प्रश्न—परमात्मा की सच्ची पूजा भक्ति या उपासना क्या है ?

उत्तर—ईश्वर के गुण, कर्म और स्वभाव का चिन्तन करना और उसके अनुकूल अपने आचरण को बनाना ईश्वर भक्ति है।

प्रश्न—परमात्मा के गुण, कर्म और स्वभाव का चिन्तन क्योंकर होता है ?

उत्तर—उनके विभिन्न नामों के विचार से। क्योंकि इन नामों से परमात्मा की शक्तियां प्रकट होती हैं। जैसे सारे जगत का पैदा करने वाला होने से ब्रह्मा, सब जगह व्यापक होने से विष्णु, सुख स्वरूप और कल्याणकारी होने से शिव, ज्ञान स्वरूप और सर्वज्ञ होने से अग्नि, जगत का जीवन धारण से और प्रलय करने से और बलवान का बलवान होने से वायु, सब ओर से प्रकाशक होने से आकाश, सब फैले हुए जगत को फैलाने वाला होने से पृथ्वी, बड़ों से बड़ा और ब्रह्माण्डों का स्वामी होने से बृहस्पति, सबका पालन करने और परमैश्वर्यवान् होने से इन्द्र, जड़ और चेतन जगत का आत्मा प्रकाश स्वरूप और सबको प्रकाश करने वाला होने से सूर्य, पापियों को दण्ड देने और सूक्ष्म परमाणुओं को संयुक्त करने तथा वियुक्त करने से जल, आनन्द स्वरूप और सबको आनन्द देने वाला होने से चन्द्र, मंगलस्वरूप और सब जीवों के मंगल का कारण होने से मंगल, स्वयं बुद्धस्वरूप और सब जीवों के बोध का कारण होने से बुद्ध, अत्यन्त पवित्र और जिसकी संगति से जीव भी पवित्र हो जाते हैं, हो जाने से शुक्र, धैर्यवान होने से शनिचर, एकान्त स्वरूप अर्थात जिसके स्वरूप दूसरा पदार्थ संयुक्त नहीं, जो दुष्टों को छोड़ने वाला है इस लिए राहु, सब जगत का निवास स्थान सब रोगों सहित और मुक्ति की इच्छा करने वालों को मुंक्ति देता है और सब रोगों से छुड़ाता है इसलिए केतु, सारे जगत् का वर्तमान रूप में लाने और बनाने के योग्य होने के कारण शक्ति, धर्मस्वरूप अधर्म से रहित होने के कारण धर्मराज, न्यायाधीश और सब कर्मों का फल देने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


से यम, ब्रह्माण्ड की सब वस्तुओं और जीवन की हनन करने से काल कहलाता है। इस प्रकार परमात्मा के अनेक नाम हैं जिनका वर्णन ऋषियों मुनियों ने अपनी रचित पुस्तकों में किया है।

प्रभु के भिन्न–भिन्न नामों के विचार से उनका चिन्तन होता है। परन्तु इस चिन्तन के साथ ही वैदिक धर्म के अनुसार प्रभु के इन गुणों को, जिनका गुणवाचक नामों में निर्देष किया गया है अपने जीवन में ढालना आवश्यक है और यही वैदिक भक्ति के वास्तविक स्वरूप है । भक्त प्रार्थना में परमात्मा को न्यायकारी, पक्षपात रहित अभय आदि कहता है परन्तु अपने आचरण से वह अन्याय, पक्षपात और भीरुता आदि का परिचय देता है, तो उस की प्रार्थना निष्फल है, और वह भक्त कहलाने का अधिकारी नहीं, प्रभु के गुणों को चिन्तन करके उनको जीवन में ढालना ही वैदिक भक्ति है। प्रार्थना इसी भक्ति को लक्ष्य में रख कर के करने से सार्थक हो सकती है। प्रभु भक्तों को सर्वदा इसे दृष्टि में रखना चाहिये ।

आज मतवादि लोग वैदिक भक्ति के स्वरूप को भूलकर केवल नाम रटन को ही भक्ति मान रहे हैं। महर्षि दयानन्द इसे भक्ति नहीं कहते। उन्होंने लिखा है जैसे गुड़–गुड़ कहने से मुँह मीठा नहीं हो जाता वैसे ही नाम के केवल रटने से कुछ नहीं बनता जब तक अर्थ की भावना से चिन्तन या विचार न किया जाये और फिर उसको अपने जीवन में न ढाला जाये। यदि आज के दृष्टिकोण से संसार ईश्वर भक्ति करने लगे तो दुःख, कलेश, अशान्ति, रोग और शोक दूर होवें।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


सोमवार

# प्रार्थना १

ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।। (यजुः ३६ मं: ३)

ओंकार प्रभु तेरा नाम, गुण गावे संसार तमाम,
प्राणस्वरूप प्राणों से प्यारा, दूर दुःख सब करने हारा।
सुख स्वरूप सुखों का दाता, अन्त न कोई तेरा पाता,
सारे जगत का पैदा कर्ता, सबसे उत्तम पाप का हरता।
हे ईश्वर ? हम तुझे ध्यावे, पाप कर्म के पास न जावें,
बुद्धि करो हमारी उज्जवल, जीवन होवे हमारा निर्मल।

हे सर्वरक्षक ! प्राण स्वरूप ! दुख विनाशक सुखस्वरूप प्रभो ! आप हमें प्राणों से प्यारे हैं। हमारे प्राणाधार और प्राणनाथ हैं। आप दुर्गुणनाशक, सुखदाता और आनन्दप्रदाता हैं । हे दीनबन्धों ! दीनदयाल ! दयामय परमात्मन्! आप अपनी असीम कृपा से हर समय और हर प्रकार से हमारी रक्षा करते हैं। जब हम सो जाते हैं । तो आप ही हमारे प्राणों के सहायक और रक्षक होते हैं। जागृत अवस्था में भी आप हर प्रकार से हमारी सहायता करते हैं। चलते फिरते, उठते बैठते, हर अवस्था में आपकी दया का हाथ हमारे सिरों पर रहता है। आप ही हमारे जीवनाधार हैं। आप सर्वत्र अपने सेवकों के दुःखों को दूर करते हैं और सुख प्रदान करते हैं। आपके भक्तों को न दुःख सताता है और न क्लेश होता है। वह न कंगाल होते हैं और न पीड़ा सहन करते हैं। वह न दुखों से घबराते और न सुखों पर इतराते हैं। क्योंकि वे प्रत्येक दशा में और प्रत्येक अवस्था में अपने आपको कृपाधन से मालामाल पाते हैं। आप प्रत्येक स्थान में और प्रत्येक समय में विद्यमान हैं। आप मान वाले और ज्ञान वाले हैं। आप हमारे हृदय के भावों को जानते

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


हैं। हमारा कोई भी भेद आप से छिपा नहीं है। आप सर्वोत्तम शुद्ध पवित्र हैं। इसलिये हमारे जीवनों को भी शुद्ध निष्पाप और पवित्र बनाईये। आप सकल शुभ गुणों की खान हैं। हमें भी शुभ गुण प्रदान कीजिये। भगवन् ! ऐसी कृपा करो कि हम सर्वदा प्रतिदिन आपके गुणों का ध्यान करें। उनसे प्रीति लगायें और जीवन में धारण करें। हम दोनों काल दिल खोल कर आप से वार्तालाप करें।

हे जगतमाता, जगत की जननी ! हम आपकी पवित्र गोद में प्रतिदिन बैठा करें। हम कभी भी पाप के कीचड़ से अपने मनुष्य रूपी चोले को गन्दा न करें, बल्कि पुण्य कर्मों से उसको निष्पाप और निर्मल बनाये रखें। हमारा मन आपकी आज्ञा का पालन करने वाला और शुभ कर्मों में रुचि रखने वाला हो। हे बुद्धिदाता ! आप हमें विवेकशील, विचारशील, विद्याप्रेमी और धारणावती मेधा बुद्धि प्रदान करें। आप हमें बुद्धि दें ताकि हम अपने आपको पापों की ठोकर से बचा सकें। धर्माधर्म और झूठ की पहचान कर सकें। विद्या और अविद्या का अन्तर जान सकें और निश्चयात्मक हो कर सत्य और विद्या को ग्रहण कर सकें। इससे हमारा मनुष्य जीवन सफल होगा और हमारी कीर्ति और यश संसार में फैलेगा।

दयालु पिता! हमारी बुद्धि सर्वदा स्वच्छ और पवित्र रहें। असत्य, अविद्या, अन्धकार और अज्ञान से बच कर हम सत्य, विद्या, प्रकाश और ज्ञान की ओर निरन्तर बढ़ते चलें। धर्म, काम और मोक्ष की सिद्धि के अपने जीवन लक्ष्य को कभी न भूलें और आप के सच्चे अमृत आर्य पुत्र बन करके इस लक्ष्य की पूर्ति के लिये यत्नवान रहें। यही आपकी पवित्र सेवा में हमारी प्रार्थना है, स्वीकार करो, स्वीकार करो ।

ओ३म् शान्ति ! शान्ति !! शान्ति !!!

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


**मंगलवार**

# प्रार्थना २

**ओ३म् यां मेधांदेवगणाः पितरश्चोपासते। तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु।** **(यजु० ३२ मं: १४)**

ज्ञानवान मोहे कीजिये जगदीश्वर भगवान ।
बिना ज्ञान के है प्रभो। मिटे न तम अज्ञान ।
जिस बुद्धि को कामना करते हैं विद्वान ।
बुद्धिदाता दीजिये वह बुद्धि मोहे दान ।
बुद्धि दो मोहे इस लिये करूं वेद प्रचार ।
अपना जीवन शुद्ध हो जगत का करूं उद्धार ।

दयामय भगवान! जिस प्रकार सूर्य के बिना आंख व्यर्थ है उसी प्रकार ज्ञान के बिना बुद्धि निकम्मी है और बुद्धिहीन मनुष्य का जीवन व्यर्थ है। इसलिये ज्ञान के भंडार ! आप हमको नाना प्रकार की विद्या सीखने का बल प्रदान करें तांकि हमारी बुद्धि निर्मल हो और हम अनेक पापों से रहित हों। आप उच्च हैं। हमें भी इस लोक में ऊँचा पद प्रदान करें। हमारी विद्या महान हो। सामर्थ्य महान हो, चतुराई महान् हो। धैर्य महान हो। धन और सुख सम्पत्ति महान् हो, शरीर व आत्मा बलवान हो ताकि हम को किसी भी दुष्ट का भय न रहे। हमारा जीवन सदा ही निर्दोष और धर्मयुक्त हो। हम प्राणीमात्र के शुभ चिन्तक हों। हमारे हाथ से किसी की बुराई न हो! किसी को दुःख प्राप्त न हो। हम दूसरों के दुख को दूर करने वाले और अविद्या अन्धकार को मिटाने वाले हों ।

परमदेव! आप ही हमारे परम मित्र हो हमको सर्वदा सुख देने वाले हो। हमको दुष्टों के अत्याचारों से बचाए रखें। हमारे अन्दर बुरी भावनाएँ उत्पन्न न हों। हमारे सम्बन्धी और रिश्तेदार पापी और मूर्ख न हों। हमारे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


पड़ोसी और मित्र धर्मपरायण और शुभ विचार वाले हों। हमारे नगर और ग्राम अविद्या और अन्धकार को मिटाकर विद्या के प्रकाश से प्रकाशित हों। हमारे देशवासी गुणवान और बुद्धिमान हों, आप हमको स्थिर रहने वाले सुख प्रदान कीजिये । हमको उत्तम बुद्धि और पराक्रम प्रदान कीजिये । हे ज्ञानस्वरूप अग्ने! परमात्मन! जिस ज्ञानवती और धारणावती बुद्धि को प्राप्त करके विद्धान लोग पूज्य बनते हैं। जिस ज्ञान से वे संसार में चमकते हैं। जिस विचित्र मेधा को प्राप्त करके वे अपना नाम उज्जवल कर जाते हैं वह मेधा और सद्‌बुद्धि हमें प्रदान कीजिये। हे आदि गुरु ! सत्यगुरदेव! धर्म के मर्म को जानने वाले अनुभवी महात्मा जिस बुद्धि की उपासना करते हैं, जिस विचारशील बुद्धि को वे धारण करते हैं। कृपा करके वह बुद्धि हमें भी प्राप्त कराईये।

प्रभो! ऐसी कृपा करो कि हम यथार्थ ज्ञान द्वारा सत्य और झूठ का, नित्य और अनित्य का, पवित्र और अपवित्र का, ज्ञान और अज्ञान का, बन्धन और मोक्ष का, जड़ और चेतन का, कर्तव्य और त्याग का भेद भली भांति जान सकें और सब कुछ जानकर अपने जीवन को सफल बना सकें। आपके ज्ञान वेद भगवान की आज्ञानुसार अपना आचार बना सकें। हे प्राणनाथ ! प्राणरक्षक ! हम आज यहीं आपसे दान मांगते और यही वर चाहते हैं कि हमें विद्वान, बुद्धिमान, और मेधावी बनावें जिससे कि हमारा अज्ञान दूर हो, जड़ता और मूर्खता भाग जायें। पाप और व्याभिचार निकट न आये। हमारे हृदय मन्दिर आपकी ज्योति से जगमगा उठें। वहां आपका ही प्रकाश हो, आपके वैदिक ज्ञान का ही चान्दना हो । हे सर्वोत्तम ! प्रजापालक परमेश्वर ! आप हमें सत्य विद्यायुक्त मेधाबुद्धि दें । हम ज्ञानयुक्त कर्म करें, जिससे कि हमारा जीवन ज्ञानमय, आनन्दमय और सुखमय हो, दयानिधे! यही आपकी सेवा में प्रार्थना है। स्वीकार कीजिये, स्वीकार कीजिए ।

ओ३म् शांति। शांति।। शांति।।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


**बुद्धवार**

# प्रार्थना ३

ओ३म् भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्ष भिर्यजत्राः स्थिरैरंगैस्तुष्टुवा॰सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।। (यजुः २५ मं: २१)

हे देवों के देव पिता जी ! कान सुनें मेरे कल्याण।
निर्मल होवे आंखें मेरी बुरी न हो देखन की बान।।
बुद्धि मेरी करो पवित्र, ऐ प्राणों के राखनहार।
वाणी से हो तेरी भक्ति, हे सुख सम्पत्ति के भण्डार।।
मन मेरा हो सदा पवित्र, आयें न इसमें बुरे विचार।।
रोग रहित हों प्राण हमारे, सर्वव्यापक हे करतार।।
प्यारे ईश्वर भक्त जो उनकी है सदा से यह पहचान।।
हाथी से कीड़ा तक देखें, सब जीवों को मित्र समान।।
आत्मवत् सब को ही जाने, हैं सो जग में जाननहार।
ईश्वर भक्त उनको ही मानों सच्चे वेद धर्म अनुसार।।

हे सर्व सुखों के दाता ! हम जो कुछ भी मांगेंगे, आप से ही मानेंगे। क्योंकि आप महादानी हैं। यह सारा जगत आपने हम जीवों के सुख और कल्याण के लिये ही बनाया है। हमको केवल मात्र आपका ही सहारा है। हे दयामय! आप ऐसी कृपा करें कि हम आपको छोड़कर और किसी के द्वार पर न जायें। आप अपनी शरण में आने वालों की सदा रक्षा करते हो। आप अपने प्रेमियों का त्याग नहीं करते और हमें पूरा विश्वास है कि आप हमारी मनोकामनाओं को पूर्ण करेंगे। आप ऐसे कृपानिधान हैं कि जो भी सच्चे मन से आपकी भक्ति करता है आप उसका यह जन्म और परलोक सुधार देते हैं। महाराज! आप ऐसी कृपा करें कि हम आपको हृदय से कभी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


न भुलायें। सदा आपको अपने अंग संग समझें ताकि हम पापों से दूर रह कर सदा आनन्दित रहें।

जीवनदाता भगवन! आपको आत्मसमर्पण करने वाले सदा निष्पाप होकर परमानन्द के भागी बनते हैं। इसलिये हे प्रभो! मैं अपनी आत्मा को, अपनी बुद्धि और मन को आपके अर्पण कर दूं। मेरी ज्ञानेन्द्रियां, आंख, कान आदि सर्वत्र आपका यश देखें और सुनें। मेरी कर्मेन्द्रियां सदा आपकी आज्ञानुसार वेदोक्त कर्म करें। संसार के सकल पदार्थ हमारे लिये कल्याणकारी हों। हम उनका धर्म और न्याय से भोग करते हुये आपका यश और कीर्ति गायन करें। हमारे आत्मा, बुद्धि, मन और इन्द्रियों का बल पाप के अर्पण न हो बल्कि यह जगत के उपकार में लगे। हे आदि देव दातार प्रभो! हम लोग आपकी कृपा से भद्र या कल्याण की बात, पवित्र वेद ज्ञान की कथा और शास्त्रीय उपदेशों को श्रवण करें।

हे न्यायकारी! हम आंखों में कल्याण या मंगल सुख को सदा ही देखें। आपकी पवित्र रचना का अवलोकन करें। जगत के सौन्दर्य को देखें। हे पिता जी! हम सदाचारी, सुशील और सज्जन पुरुषों का संग करें। हे जगदीश्वर! हमारे सब अंग उपांग सब धर्म में स्थिर रहें। सदा बलवान और पुष्ट हों ताकि हम पूर्ण स्थिरता से आपकी स्तुति प्रार्थना और उपासना कर सकें। हम सदा परोपकारी सज्जनों और धर्मात्मा पुरुषों की चरण सेवा में तत्पर रहें। हे पिता! हम अपना जीवन परोपकारमय बनावें। आज हम सब मिलकर यही वर मांगते हैं। कृपा करो! दया करो! आप की शरण में आये हैं। हमारी प्रार्थना को स्वीकार करो जिससे कि हमारा कल्याण हो।

ओ३म् शान्ति! शान्ति!! शान्ति!!!

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


गुरुवार

# प्रार्थना ४

**ओं तेजोऽसि तेजो मयि धेहि। वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि।**
**बलमसि बलं मयि धेहि। ओजोऽस्योजो मयि धेहि।**
**मन्युरसि मन्युं मयि धेहि। सहोऽसि सहो मयि धेहि।**

**(यजु० १६ मं: ६)**

अग्नि रूप परमेश्वर तुम तेज के भण्डार हो।
तेज हमको दीजिये तुम दयामय दातार हो।
जोर वाले आप हो हमको भी जोरावर करो।
वीर्यवान बनाओ हमको तेज में बरतर करो।।
बलों के भण्डार भगवान जगत में हो महाबली।
तुझसे बल को ग्रहण करके जाएँ जग में कर भली।।
सहन शक्ति दीजिये तुम सबकी सहनेहार हो।
सुख के अन्दर रखने वाले जग के सर्वाधार हो।।

हे तेजस्वरूप बलों के भण्डार परम पिता ! आप अकेले अपनी सामर्थ्य से जगत के रचने वाले, पालन पोषण करने वाले और रक्षा करने वाले हैं। हम आप को छोड़ कर किसी और की पूजा न करें। जो मान और अधिकार आपके लिये हैं, वह मान और अधिकार और किसी के अर्पण न करें। हे अपार दयामय दातार! आप सबके ऊँचे हैं। आपकी महिमा अकथ है। आपका न वार है न पार, भगवन्। आपका दिया हुआ धन ऐश्वर्य हमारे लिये सुखकारी हो। आपका दिया हुआ मान हमारे लिये सदैव सुखकारी हो। संसार के धारण करने वाली शक्ति : आकाश, प्राण, पृथ्वी, अग्नि, जल ये सब आनन्ददायक हों। सत्य, धर्म कल्याणकारी नियम, प्रशंसा के योग्य गुण कर्म सब ही शान्ति के देने वाले हों। आपका दयारूपी हाथ सदैव हमारे सिरों पर रहे। विद्वानों की संगति से हम सुखी रहें। आप कल्याणकारी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


साधनों से हमारी रक्षा करते रहें। हमारी बुद्धि, हमारा मन, आयु और प्राण, ज्ञान और कर्मेन्द्रियां सब जगत् हितकारी कामों के अर्पण हों।

परम पिता दयालु देव! आप हम पर ऐसी कृपा करें कि जिस प्रकार एक पुत्र आसानी से अपने पिता के पास पहुंच जाता हैं, ऐसी आसानी से हम आपके पास पहुंच जायें। हमारा आपके साथ बहुत ही निकट का सम्बन्ध हो और हम सदा ही आपके चरणों में सिर झुकाते रहें। हे सर्वाधार स्वामिन! किसी को किसी का भरोसा हो। कोई अपने बल, बुद्धि, ज्ञान, भुजा शक्ति के सहारे घमंड करता हो परन्तु हमको तो केवल आपका ही आश्रय हो। हम निर्बलों के आप ही बल, सच्चे रक्षक और स्वामी हैं। आप ही हम को अपनी पवित्र गोद में लेकर सुख और परमशान्ति प्रदान करें।

हे सुप्रकाश और अनन्त तेज वाले प्रभो! आप तेजस्वरूप हैं। अपनी कृपा से हम में भी तेज धारण करो। हमें तेजस्वी बनाओ। हम अपने आप को कभी भी दीन, हीन और क्षीण न समझें। किसी और के आगे हाथ न फैलायें। हे अनन्तवीर्य परमात्मन् ! आप वीर्यवान हो। वही सर्वोत्तम बल हम में स्थिर कीजिये। हम भी पराक्रमी, शक्तिशाली और वीर बनें। आप दुष्टों पर क्रोध करने वाले हैं, उनको ताड़ना करने वाले और पापियों को नापने वाले हैं, हमें भी उन पर क्रोध धारण कराओ। हे सहनशील परमदेव! आप मित्र, शत्रु, सज्जन और दुष्ट स्वभाव जनों का प्रत्येक प्रकार की बुरी चेष्टाओं को सहन करते हैं। हमें भी आप सहन करने की सामर्थ्य दें। हे पिता! हम पुत्रों को भी तेजस्वी, वर्चस्वी, ओजस्वी, पराक्रमी, बलवान, वीर्यवान और सहनशील बनाईये। हमारी यही कामना है। इसको पूर्ण करो। पूर्ण करो।. पूर्ण करो ।।।

ओ३म् शान्ति! शान्ति!! शान्ति!!!

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


**शुक्रवार**

# प्रार्थना ५

**ओं स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव। सचस्वा नः स्वस्तये।।**

**(यजु० ३ मं २४)**

जिस मन में प्रभु प्रेम है श्रद्धा भक्ति अपार।
निश्चय ऐसे भक्त की आप प्रभु लें सार।
सोने से चलना भला कुछ मार्ग कट जाए।।
साथी जो देखा करे निष्फल समय बिताए।।
सोये न चलता रहे प्रभु प्रेम म न लाए।
क्या जाने करुणानिधि साथी दे मिलाए।।
दुर्गम मार्ग जान कर जो कायर डर जाए।
बैठा देखे साथ को आखिर क ो पछिताए।।

हे जगदीश पिता करुणानिधान। आप हमारे पूज्य पिता हैं। आप परम पालक और जगत के पैदा करने वाले हैं। आप सबकी रक्षा करते और सब प्रकार के सुख देते हैं। आप सारे चराचर जगत को जानते हैं। आप सर्वत्र व्यापक हैं। आप सूर्यादि लोक लोकान्तरों को नियम में चलाने वाले और प्राणीमात्र का पालन पोषण करने वाले हैं। आप ही सकल संसार के शासक हैं। आप ही प्रजापति, प्रजापालक और सबके स्वामी हैं। हे दातार! हम पर अनुग्रह करो कि हम अपने जीवन की देखभाल कर सकें। इस अमूल्य मनुष्य जन्म को मीठा, रसमय और मधुमय बनावें और उसके चार फलों धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त होवें। अपने तन, मन, धन और आत्मा को आपके अर्पण करें। प्रभो! हम आपके होकर रहें। आपके बन कर जियें। आपका यश गान करें आपकी आराधना करें। आपकी भक्ति करें। आपकी वन्दना कां रस पान करें। प्यारे पिता! वरदान दो कि हमारा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


कल्याण हों, हमें सुख और शान्ति प्राप्त हो। आप हमारे परम मित्र हो, आप हम को सर्वदा सुख देने वाले हों। हम को दुष्टों के अत्याचार से बचाये रखें। आप हमको स्थिर रहने वाला सुख प्रदान करें। हम को उत्तम बुद्धि और पराक्रम प्रदान करें।

महान् प्रभो! सदा एक रस रहने वाले परमात्मन्। आप सब का पालन पोषण करने वाले हैं। आपकी परम कृपा से जो जीवन हमें प्राप्त हुआ है, हमें सुमति प्रदान करो कि हम इस अमूल्य जीवन को विषय विकारों और पापों में नष्ट न करें। यह धन दम्पति, नाना प्रकार के सुख हमारे बल और बुद्धि के कारण नहीं बल्कि यह सब आपकी कृपा का फल हैं, आप हमें कृपा का पात्र बनायें। आपके दिये धन, परिवार, सन्तान और सुख भोगों को पाकर हम आपको भूल न जायें बल्कि आपकी याद सदैव हमारे मन में रहे और हम सदा आप का धन्यवाद गाते रहें। हम अपने सब कर्मों को आपके चरणों में समर्पण कर दें। हमारा जीवन यज्ञरूप हो। हमारी इन्द्रियां निर्दोष हों। प्राणिमात्र का कल्याण हमारे जीवन का उद्देश्य हो। निष्पाप हो कर हम इस जीवन यात्रा को समाप्त करें।

महाराज! हम बलहीन हैं। आपकी सहायता के बिना आगे नहीं बढ़ सकते। आप हमारी स्नेहमयी माता हैं। परम हितकारी हैं। इस लिये हमें धर्म मार्ग पर चलना सिखलायें। यह मार्ग विषयों की चमक से चकाचौंध हो रहा है, और धर्म का स्वरूप कहीं दृष्टिगोचर नहीं होता। हमारी ज्ञान की आखें चुंधियां गई हैं। जब हम कुछ आगे बढ़ने का यत्न करते हैं यह काम, क्रोध आदि विषय कई प्रकार के रूप बनाकर हमें फंसा लेते हैं और हम पाप के गढ़े में पड़ कर दुःख और क्लेश उठाते हैं। हे दीनबन्धो! ऐसी कृपा करो कि हम यही वर आपसे मांगते रहें। प्रभो! क्षमा करो। दया करो।

**ओ३म् शांति । शांति ।। शांति ।।।**

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


शनिवार

# प्रार्थना ६

**ओं अग्ने ब्रतपते ब्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम् ह्ृदयहमनृतात् सत्यमुपैमि।। (यजुः १ मंः ५)**

ज्ञान तू ही और गुरू तू ही तू ही मुक्ति आनन्द।
जर्रे जर्रे में रम रहा पूर्ण परमानन्द।
दीनबन्धु करूणानिधे भक्तन के प्रतिपाल।
नाथ वेग सुध लीजिये कृपासिन्धु कृपाल।
हृदय मन्दिर में ध्रुव ज्योति ज्ञान जगाये।
प्रेम धूप तप अग्नि से सत्य ज्ञान दिखलाये।

ज्ञान स्वरूप! व्रतों के स्वामी! दयानिधे करतार! आप ज्ञान स्वरूप हैं, सच्चिदानन्द हैं। आपका प्रकाश सूर्य, चन्द्र, बिजली और अग्नि आदि में चमक रहा है। हे प्रकाश के स्त्रोत! हमारे हृदय मन्दिर में भी आप की ज्योति का प्रकाश है। सत्य, ज्ञान और वेद ज्ञान का दीपक हमारे मन मन्दिर में प्रकाशमान हो, जिसके प्रकाश में हम ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ व सन्यास आदि व्रतों पर चलन, पालन भली प्रकार कर सकें। आप हम को इन सच्चे व्रतों की ओर आचरण करने की शक्ति प्रदान कीजिये। हे प्रकाशमय प्रेम के भण्डार! मैं आज व्रत लेता हूं कि सत्य को ग्रहण करूंगा, अविद्या, अहंकार को मिटा कर प्रकाश की ओर पग बढ़ाऊंगा। पाप को त्याग कर शुभ कर्मों से जीवन व्यतीत करूंगा, अभिमान को छोड़कर नम्रतापूर्वक संसार की सेवा का प्रण धारण करुंगा। मैं आज से सत्यमानी, सत्यकारी और सत्यवादी बनने का यत्न करूंगा। मैं सर्वदा सत्य बोलूंगा और प्यारा सत्य बोलूंगा। कृपा करो। मेरा यह व्रत सफलता को प्राप्त हो। हम कुमार्ग को छोड़ कर सत्य मार्ग के यात्री बनें। मृत्यु कें भय से बचें और अमर पद को प्राप्त हों.

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


प्यारे पिता! आप अमर हैं, हमें भी मृत्यु के पंजे से छुड़ाकर अमर बनाओ। प्रभो! सचमुच मैं आपका अमृत पुत्र कहलाने का अधिकारी बनूं। हे अग्ने! ज्ञान सागर! हम आपकी ही उपासना करें, आपको ही नमस्कार करें। आपका ही चिन्तन और आपका ही कीर्तन करें। प्रतिदिन दोनों सन्ध्याओं में आपके दरबार में ही उपस्थित हों। आपके सिवा किसी को पूज्य न मानें। किसी दूसरे की उपासना न करें, कोई देवी देवता हो या पैगम्बर, गुरु हो या अवतार, आपके स्थान पर किसी की पूजा न करें। हे परम गुरु ! हमें ऐसा उपदेश गुरुमन्त्र सिखाओ। ऐसी शिक्षा दो कि हम जड़ पदार्थों और साकार मनुष्यों की भक्ति से हटकर आपके प्रकाश स्वरूप और आनन्द स्वरूप का संग करें। हे धर्म ज्ञान और बलों के अखण्ड भण्डार! यह तीनों पदार्थ हमें प्रदान कीजिये। धर्म हमारी आत्मा के लिये शान्तिदायक हो। ज्ञान धर्म के मार्ग को स्पष्ट रूप से दिखलाने वाला हो और कर्त्तव्य हमारा मार्ग प्रकाश करें।

प्रभो! आपने वेदों में बताया है कि इन्द्रियों को वश में रखना, पुण्य कर्म करना, दान देना, प्राणिमात्र को मित्र की दृष्टि से देखना तथा सबका हितचिंतन करना धर्म कहलाता है। आप हमें इस धर्म को धारण करने का बल प्रदान करें। हमें अपना अमृत पुत्र और धर्मपुत्र होने का अधिकार प्रदान करें। धर्म को जानने के लिये पवित्र, सच्चे और निर्मल ज्ञान की आवश्यकता है और वह ज्ञान वेदादि सत्य शास्त्रों से ही प्राप्त हो सकता है, इसीलिये हे पिता! आप हमारी रुचि सदग्रन्थों के पाठ में बढ़ायें। आज से हमारे स्वाध्याय में कोई भी बुरा ग्रन्थ, सृष्टि नियम के विरुद्ध पुस्तक, आचार को बिगाड़ने वाले किस्से कहानियां और मनुष्यों में वैर विरोध फैलाने वाले मतों के ग्रन्थ न हों अपितु जीवन को पवित्र करने वाले और प्राणिमात्र का उपकार चाहने वाले ग्रन्थ हों। जिनको पढ़ने का व्रत धारण करके हम अपने जीवन को सफल बना सकें। यही आपसे याचना है और यही प्रार्थना हैं। स्वीकार करो।

ओ३म् शान्ति! शान्ति!! शान्ति!!!

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


**रविवार**

# प्रार्थना ७

ओ३म् अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान। युयोध्यस्मज्जुहुराममेनो भूयिष्ठांते नम उक्तिं विधेम।। (यजु० ४० मं: १६)

एक औ३म् कर्त्ता पुरुष सत नाम कर्तार।।
अचल अखण्ड आदि गुरू किया ज्ञान विस्तार।।
दयासिन्धु करुणानिधि हर घट वास निवास।।
नस नाड़ी वन्दन नहीं निर्मल शुद्ध प्रकाश।।
तात तू ही पितु मात तू ही, हो सखा तुम एक।
फिर भय काहे का मुझे तुझ रक्षक की टेक।।
देखूं तुझ को हर जगत जहां दृष्टि जाय।
दूजा नहीं है बिन प्रभु जिसके लागूं पाय।।

हे अग्ने स्वरूप परमेश्वर! आपने संसार को बनाकर मनुष्यों को सन्मार्ग दिखाने के लिये वेदों का प्रकाश किया। वेद आपका सुन्दर काव्य है। वह मानों आपका जीवन चरित्र है, आपके गुणों का प्रकाश है। इसलिये हम मनुष्यों के जीवन चरित्र को छोड़ कर आपके जीवन चरित्र वेद का नित्य स्वाध्याय करें। इस जीवनदायक अमृत का प्रतिदिन पूर्ण प्रीति और श्रद्धा से सेवन करते रहें। स्वाध्याय के बिना आपकी उपासना अधूरी है, स्वाध्याय से ही ज्ञान चक्षु खुलते हैं। इसी से आत्मा का अन्धकार नष्ट होता है और स्वाध्याय से ही पाप और पुण्य का यथार्थ ज्ञान मिलता है। स्वाध्याय ही परम तप है।

प्रभो! बल दो कि हम इस परम तप का आदर सम्मान करें। वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना अपना परम धर्म समझें। अन्धेर रात्रि में प्रकाश की आवश्यकता होती है नहीं तो यात्रा में ठोकरें खानी पड़ती

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


हैं। गढ़ों में गिरना पड़ता है, और अंगों के चकनाचूर होने का भय लगा रहता है। धर्म का मार्ग तेज खण्डे की धार, अति सूक्ष्म और कठिन है। यदि इसके साथ अज्ञान का अंधेरा भी सम्मिलित हो तो इस पर निर्विघ्न चलना कठिन ही नहीं, असम्भव भी है। इस मार्ग में तो ऋषि दयानन्द जैसे तपस्वी का ही निर्विघ्न पग चल सकता है जो कि आपके वेद रूपी ज्ञान का सच्चा भक्त हो। प्रभो! हममें भी वेदों के लिए सच्ची भक्ति प्रदान कीजिये, हमारे मन में तो धर्म ग्रन्थों के पाठ की रुचि ही नहीं और यही हमारे पतन का कारण है और यही दुर्बलता का हेतु है।

हे ज्ञान पिता! हमारे ज्ञान नेत्र खोल दीजिए जिससे आपके प्रेममय स्वरूप को देख कर हृदय प्रसन्न हो जाए, आपकी भक्ति का रसपान करके तृप्त हो जायें। हे सर्वान्तर्यामी ! आप हमारे पापों को, बुरी कामनाओं को और दुष्ट सङ्कल्पों को जानते हैं ! आप हमारे हृदय की मैल को, इन्द्रियों की निर्बलताओं और त्रुटियों को जानते हैं परन्तु इतना जानते हुए भी, हे पतित पावन ! आप हमारा परित्याग नहीं करते। पूर्ववत् भोग पदार्थ दिये जाते हैं। धन्य–धन्य हो दयामय भगवान ! तुम धन्य हो !

हे दयासिन्धो ! हम आपकी पवित्र शरण में आ गये हैं। हमें पाप के राक्षप्ल से बचाओ, पुण्य का मार्ग बतलाओ । हमें पुण्यात्मा बनाओ, बलवान हृदय और निर्मल चरित्र बनाओ। दुखी हृदय को शान्त करो। हमारा जीवन मिठास भरा हो। मन पापों की मैल से साफ हो। शुद्ध और निर्मल हो। हमारे हृदय में आपका सिहांसन हो इसमें आपकी ज्योति का प्रकाश हो। हम आपके मंगल स्वरूप को देखकर अपना जीवन सफल करें। विषय विकारों को त्याग कर आपके सच्चे भक्त और दास बनें। आपके अपार प्यार और कृपा के भागी बनें। यही आज आपकी सेवा में प्रार्थना करते हैं। आशा है, आप इसको स्वीकार करेंगे।

ओ३म् शान्ति! शान्ति!! शान्ति!!!

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# प्रार्थना भजन (१)

हे दयामय हम सबों को शुद्धताई दीजिए।
दूर करके हर बुराई को भलाई कीजिए।।
ऐसी कृपा और अनुग्रह हम पर हो परमात्मा।
हो सभासद इस सभा के सब के सब धर्मात्मा।। १।।
हो उजाला सब के मन में ज्ञान के प्रकाश से।
और अन्धेरा दूर सारा हो अविद्या नाश से।। २।।
खोटे कर्मों से बचें और तेरे गुण गावें सभी।
छूट जावें दुःख सारे सुख सदा पावें सभी।। ३।।
सारी विद्याओं को सीखें ज्ञान से भरपूर हों।
शुभ कर्म में होवें तत्पर दुष्ट गुण सब दूर हों।। ४।।
यज्ञ हवन से हो सुगन्धित अपना भारत वर्ष देश।
वायु जल सुखदाई होवें जायें मिट सारे क्लेश।। ५।।
वेद के प्रचार में होवें सभी पुरुषार्थी।।
होवें आपस में प्रीति और बनें परमार्थी।। ६।।
लोभी और कामी क्रोधी कोई भी हम में न हो।
दुरव्यसनों से बचें और छोड़ देवें मोह को।। ७।।
अच्छी सङ्गत में रहें और वेद मार्ग पर चलें।
तेरे ही होवें उपासक और कुकर्मों से बचें।। ८।।
कीजिए हम सब का हृदय शुद्ध अपने ज्ञान से।
मान भक्तों में बढ़ाओ अपना भक्ति दान से।।९।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# प्रार्थना भजन (२)

रहे भावना ऐसी मेरी सरल सत्य व्यवहार करूं,
बने जहां तक इस जीवन में औरों का उपकार करूं।
अहंकार का भाव न रक्खूं नहीं किसी पर क्रोध करूं,
देख दूसरों की बढ़ती को कभी ना ईर्ष्या भाव करूं
नहीं सताऊं किसी जीव को झूठ कभी न कहा करूं
पर धन पर बनिता* न लुभाऊं संतोषामृत पिया करूं
मैत्री भाव जगत में मेरा, सब जीवों पर नित्य रहे,
दीन दुःखी जीवों पर मेरे, उर से करुणा स्रोत बहे।
गुणी जनों को देख हृदय में, मेरे प्रेम उमड़ आवे,
बने जहां तक उनकी सेवा, करके मेरा मन सुख पावे।
होऊं नहीं कृतघ्न कभी मैं, द्रोह न मेरे उर आवे,
गुण ग्रहण का भाव रहे, नित्य दृष्टि न दोषों पर जावे।
होकर सुख में मगन न फूलें, दुःख में कभी न घबरावें,
पर्वत नदी श्मशान भयानक, अटवी से न भय खावें।
रहे अडोल अकंप निरन्तर, यह मन दृढ़तर बन जावे,
इष्ट वियोग अनिष्ट योग में, सहनशीलता दिखलावे।
सुखी रहें सब जीव जगत के, कोई कभी न घबरावे,
वैर भाव अभिमान छोड़ जग, नित्य नए मंगल गावें।
घर घर चर्चा हो धर्म की, दुष्कृत दुष्कर हो जावे,
ज्ञान चरित्र उन्नत कर अपना, मनुष्य जन्म फल सब पावें।
परम अहिंसा धर्म जगत में, फैले सर्व हित किया करे,
रोग मरी दुर्भिक्ष न फैले प्रजा शान्ति में जिया करे।
फैले प्रेम परस्पर जग में, मोह दूर ही रहा करे,
अप्रिय कटु कठोर शब्द नहीं, कोई भी सुख से कहा करे।

---

*"स्त्रीयां पर" नर कहे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# प्रार्थना के दोहे

हाथ जोड़ विनती करें सुनिये दीन दयाल।
तुम लग हमारी दौड़ है तुमही हो रछपाल।
आपकी भक्ति प्रेम से मन होवे भरपूर।
राग द्वेष से चित सदा कोसों भागे दूर।।
अति अनुग्रह कीजिए सेवक अपने जान।
अपनी भक्ति का हमें शीघ्र दीजे दान।।
हमरे मन में आय कर करिए प्रभु निवास।
घर अपना कर लीजिए इसमें करिये वास।।
जो आवे तव शरण में सो उतरे भव पार।
सुधर जाये उसका जन्म सब से करे प्यार।।
जय जय हो सब जनों में सब मनों में नित्य।
सब हृदयों में जय सदा सर्व कर्म में कृत्य।।
भगवन कृपा तेरी से भला भद्र हो जाय।
जग में सब नर नारी का कष्ट न कोई पाय।।
सुख होवे संसार को दुख न होवे मान।
भक्त बनें सब आपके भुवन भावन भगवान।।
मिल जुल कर सब जन रहे प्रेम प्रीति कर भाव।
सदाचार उपकार में सब का होवे चाव।।
पाप से हमें बचाईए करके दया दयाल।
अपना भक्त बनाय कर सबको करो निहाल।।
खेतियां, फूलें फलें दूध पूत धन हों।
तन मन होवें पुष्ट ही अरिगण जावें सो।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# आर्य समाज के प्रति महापुरुषों के उद्गार

१. आर्य समाज ने लड़के लड़कियों की शिक्षा, स्त्रियों की दयनीय अवस्था का सुधार, दलितों के उद्धार का कार्य किया। आर्य समाज ने यह बहुत बड़ा कार्य किया है। —जवाहरलाल नेहरु

२. सर्व साधारण की जो उन्नति हुई है, उसका मूल कारण आर्य समाज है। —यदुनाथ सरकार

३. जहाँ जहाँ आर्य समाज है, वहाँ वहाँ जीवन ज्योति है।

—महात्मा गांधी

४. जहाँ जहाँ आर्य समाज है, वहाँ वहाँ राजद्रोह प्रबल है।

—वैलेन्टाइन चिरोल

५. संगठित कार्य, दृढ़ता, उत्साह तथा समन्वयात्मक दृष्टि से आर्य समाज की समानता और कोई सोसायटी नहीं कर सकती।

—सुभाषचन्द्र बोस

**वैदिक धर्म का रक्षक, भारतीय सभ्यता और संस्कृति का परिपालक, नवयुग के सजग प्रहरी—**

## — आर्य समाज की मान्यताएं —

* मानव मात्र एक परमात्मा का उपासक हो।
* सभी प्राणियों में सद्भाव हो।
* विचारों की एकता के लिए सभी वेद का अनुगमन करें।
* सामाजिक और राष्ट्रीय एकता के लिए ऋषि—मुनियों का अनुसरण करें।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


* अज्ञान से ऊपर उठें, युग के बढ़ते हुए तेज कदमों के साथ कदम मिलाकर चलें। कोई व्यक्ति, समाज या देश शारीरिक, बौद्धिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक अथवा किसी भी रूप में पीछे न हो।

* सारे विश्व का धर्म एक हो, नाना सम्प्रदायों तथा मत–मतान्तरों के जाल से मानव मुक्त हो।

* नास्तिकता से मनुष्य की रक्षा की जाय, धर्म की किसी भी देश में उपेक्षा न हो।

* उन्नति और वृद्धि का सबको अवसर प्राप्त हो, ऊँचनीय या छुआछूत का भेद समाप्त हो।

## धर्म क्या है?

* वेद और वेदानुकुल स्मृतिशास्त्रों तथा उपनिषदों ऋषि–मुनियों द्वारा प्रतिपादित कर्म ही धर्म है तथा इनके विरूद्ध सब अधर्म है।

* धर्म की सबसे बड़ी कसौटी यह है कि जो बात अपने मन को अच्छी नहीं लगती, दूसरों के लिए न की जाए। जैसे–यदि तुम्हें कोई गाली दे, तुम्हारी हिंसा करें, तुमसे झूठ बोले, तुम्हारे परिवार या मित्रों में फूट डाले, तुम्हारी बहन–बेटियों पर बुरी नज़र डाले आदि तो तुम्हें बुरा लगेगा। इसलिए दूसरों के साथ इस प्रकार के व्यवहार न करना ही धर्म है।

* धर्म और सम्प्रदाय के भेद को ठीक–ठीक समझ लेना चाहिए। धर्म एक है, सम्प्रदाय अनेक। धर्म का मूल वेद है, सम्प्रदाओं का मूल है मनुष्यों का स्वांर्थ आदि अज्ञान।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# वेद

* सृष्टि की आदि में मानव मात्र के हित के लिए परमात्मा द्वारा दी गई आज्ञा वेद है।
* वेदज्ञान शाश्वत, सत्य, अमर, सार्वभौम, सार्वजनिक और सर्वकालिक है।
* वेद में वर्णित कोई भी सिद्धान्त बुद्धि, तर्क, विज्ञान एवं अनुभव तथा सृष्टिक्रम के विरूद्ध नहीं है।

# ईश्वर

* सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदिमूल परमेश्वर है।
* ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्व शक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर–अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है, उसी की उपासना करना योग्य है।

# मूर्ति पूजा

* आर्य समाज केवल एक ईश्वर को ही उपासना योग्य मानता है। मूर्तिपूजा वेद विरूद्ध होने से आर्य समाज इसे पूजा के अयोग्य मानता है। यदि कोई मूर्तियाँ पूजने योग्य है तो वे माता, पिता, आचार्य, अतिथि और पति के लिए पत्नी और पत्नी के लिए उसका पति है। इनकी तन–मन–धन से यथायोग्य सेवा करना ही इनकी पूजा है। ईश्वर के गुण, कर्म और स्वभाव के अनुकूल अपने गुण कर्म स्वभाव को करते जाना और निष्काम भाव से संसार की सेवा करना परमेश्वर की उपासना है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# जीवात्मा

* जीवात्मा अनुरूप, चेतन, अनादि और अनन्त और अल्पज्ञ है। यह कर्मों के अनुसार शरीर धारण करता है। शरीर बदलते रहते हैं परन्तु नाना जन्मों में एक ही बना रहता है। जीवात्मा और परमात्मा में मुख्य भेद यह है कि जीवात्मा शरीर धारण करता है, जन्म मृत्यु के बन्धन में आता है पर परमात्मा नहीं आता ।

# सृष्टि रचना का उद्देश्य

* जीव आत्मा की शक्तियों के पूर्ण विकास अर्थात किए हुए कर्मों के फलभोग जन्म–मरण के बन्धन से मुक्ति के लिए जगत का निर्माण होता है।

# मनुष्य की व्यक्तिगत उन्नति

* केवल आर्थिक, शारीरिक तथा सांसारिक उन्नति ही मनुष्य का लक्ष्य नहीं होना चाहिए अपितु परलोक की उन्नति का भी लक्ष्य होना चाहिए।

# समाज

* समाज की उन्नति के लिए व्यक्ति की उन्नति आवश्यक है।
* समाज का चरित्र उसके सदस्यों के चरित्र पर आधारित हैं।
* पहले शारीरिक उन्नति और फिर आर्थिक उन्नति के बाद सामाजिक उन्नति की बारी आती है। बिना शारीरिक, आर्थिक उन्नति के सामाजिक उन्नति का प्रयत्न करना मूर्खता है।

# राष्ट्र

* हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे को होगा, उसकी उन्नति तन–मन–धन से करें।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


* राष्ट्र रक्षा के लिए "ब्रह्म" और "क्षात्र' शक्तियां दोनों आवश्यक हैं। इन दोनों शक्तियों के अभाव में देश की रक्षा एवं प्रगति असंभव है।

*राज्य व्यवस्था का मूल है–इन्द्रियों को जीतना। अजितेन्द्रिय शासकों या नेताओं के हाथ में देश को सौंपना महान मूर्खता है।

## यज्ञ

* यज्ञ त्याग का प्रतीक है। यज्ञ समर्पण के भाव को स्थापित करता है। प्रत्येक परोपकारी कार्य यज्ञ है।

* व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की उन्नति तथा रक्षा के लिए यज्ञ एवं क्षत्रिय भावनाओं की रक्षा आवश्यक है।

* यज्ञों में हिंसा सर्वथा वेद विरुद्ध है।

## देव–असुर

* यज्ञ करने वाला अग्निमय, परमात्मा में एकमात्र भरोसा रखकर कर्म करने वाला अप्रमादी आर्य देवता है। इसके विपरीत अनार्य अर्थात असुर है।

## भक्ष्याभक्ष्य

*जीव हिंसा, चोरी, विश्वासघात, छल–कपट आदि से प्राप्त पदार्थों का भोग करना अभक्ष्य तथा अहिंसा धर्मादि कर्मों से भोजन आदि प्राप्त करना भक्ष्य है।

* एक ही थाल में साथ बैठकर खाना पीना या किसी का उच्छिष्ठ खाना भी आर्य समाज निषिद्ध समझता है।

*****

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# महर्षि दयानन्द स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाशः

## (सत्यार्थ प्रकाश से उद्धृत)

सर्वतन्त्र सिद्धान्त अर्थात् साम्राज्य सार्वजनिक धर्म जिस को सदा से सब मानते आये, मानते हैं और मानेंगे भी इसलिए उस को सनातन नित्यधर्म कहते हैं कि जिस का विरोधी कोई भी न हो सके। यदि अविद्यायुक्त जन अथवा किसी मत वाले के भ्रमाये हुए जन जिस को अन्यथा जानें वा मानें उस का स्वीकार कोई भी बुद्धिमान नहीं करते किन्तु जिस को आप्त अर्थात् सत्यमानी, सत्यवादी, सत्यकारी, परोपकारक पक्षपातरहित विद्वान् मानते हैं वही सब को मन्तव्य और जिस को नहीं मानते वह अमन्तव्य होने से प्रमाण के योग्य नहीं होता। अब जो वेदादि सत्यशास्त्र और ब्रह्मा से लेकर जैमिनिमुनि पर्य्यन्तों के माने हुए ईश्वरादि पदार्थ हैं जिनको कि मैं भी मानता हूँ; सब सज्जन महाशयों के सामने प्रकाशित करता हूँ।

मैं अपना मन्तव्य उसी को जानता हूँ कि जो तीन काल में सब को एक सा मानने योग्य है। मेरा कोई नवीन कल्पना वा मतमतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है किन्तु जो सत्य है उस को मानना मनवाना और जो असत्य है उस को छोड़ना और छुड़वाना मुझ को अभीष्ट है। यदि मैं पक्षपात करता तो आर्य्यावर्त्त में प्रचरित मतों में से किसी एक मत का आग्रही होता किन्तु जो–जो आर्य्यावर्त्त वा अन्य देशों में अधर्मयुक्त चाल–चलन है उस का स्वीकार और जो धर्मयुक्त बातें हैं उन का त्याग नहीं करता न करना चाहता हूँ क्योंकि ऐसा करना मनुष्यधर्म से बहिः है।

मनुष्य उसी को कहना कि मननशील हो कर स्वात्मवत् अन्यों के सुख–दुःख और हानि–लाभ को समझे। अन्यायकारी बलवान् से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इतना ही नहीं किन्तु अपने सर्व सामर्थ्य से धर्मात्माओं–कि चाहे वे महा अनाथ, निर्बल और गुणरहित क्यों न हों–उन की रक्षा, उन्नति, प्रियाचरण और अधर्मी चाहे चक्र सनाथ महाबलवान्

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



और गुणवान् भी हो तथापि उसका नाश, अवनति और अप्रियाचर सदा किया करे अर्थात जहां तक हो सके वहां तक अन्यायकारियों के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वथा किया करे। इस काम में चाहे उस को कितना ही दारुण दुःख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी भले ही जावें परन्तु इस मनुष्यपनरूप धर्म से पृथक् कभी न होवे। इसमें श्रीमान् महाराजा भर्तृहरिजी आदि ने श्लोक कहे हैं उनका लिखना उपयुक्त समझ कर लिखता हूँः—

निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।

अधैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः ॥ १ ॥ भर्तृहरिः ॥

न जातु कामान्न भयान्न लोभाद् धर्मं त्यजेज्जीवितस्यापि हेतोः।

धर्मो नित्यः सुखदुःखे त्वनित्ये जीवो नित्यो हेतुरस्य त्वनित्यः महाभारते श्लोक ११ । १२ ॥

एक एव सुहृद्धर्मो निधनेऽप्यनुयाति यः। शरीरेण समं नाशं सर्वमन्यद्धि गच्छति ॥ ३ ॥ मनुः ॥

सत्यमेव जयते नानृतं सत्येन पन्था विततो देवयानः ।

येनाऽऽक्रमन्त्यृषयो ह्याप्तकामा यत्र तत्सत्यस्य परमं निधानम् ॥ ४ ॥

न हि सत्यात्परो धर्मो नानृतात्पातकं परभू। न हि सत्यात्परं ज्ञानं तस्मात्सत्यं समाचरेत्॥ ५ ॥ उपनिषदि॥

इन्हीं महाशयों के श्लोकों के अभिप्राय के अनुकूल सबको निश्चय रखना योग्य है। अब मैं जिन—जिन पदार्थों को जैसा—जैसा मानता हूँ उन—उन का वर्णन संक्षेप से यहां करता हूं कि जिनका विशेष व्याख्यान इस ग्रन्थ में अपने—अपने प्रकरण में कर दिया है। इन में सेः—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



१. प्रथम 'ईश्वर' कि जिसके ब्रह्म परमात्मादि नाम हैं, जो सच्चिदान्दादि लक्षणयुक्त है, जिसके गुण, कर्म, स्वभाव पवित्र हैं। जो सर्वज्ञ, निराकार, सर्वव्यापक, अजन्मा, अनन्त, सर्वशक्तिमान्, दयालु, न्यायकारी, सब सृष्टि का कर्त्ता, धर्त्ता, हर्त्ता, सब जीवों को कर्मानुसार सत्य न्याय से फलदाता आदि लक्षणयुक्त है; उसी को परमेश्वर मानता हूँ।

२. चारों 'वेदों' (विद्या धर्मयुक्त ईश्वप्रणीत संहिता मन्त्रभाग) को निर्भ्रान्त स्वतः– प्रमाण मानता हूँ। वे स्वयं प्रमाणरूप हैं कि जिनके प्रमाण होने में किसी अन्य ग्रन्थ की अपेक्षा नहीं। जैसे सूर्य वा प्रदीप अपने स्वरूप के स्वतः प्रकाशक और पृथिव्यादि के भी प्रकाश होते है, वैसे चारों वेद हैं। और चारों वेदों के ब्राह्मण, छः अङ्ग, छः उपाङ्ग चार उपवेद और ११२७ (ग्यारह सौ सत्ताईस) वेदों की शाखा जो कि वेदों के व्याख्यानरूप ब्रह्मादि महर्षियों के बनाये ग्रन्थ हैं उनको परतः अर्थात् वेदों के अनुकूल होने से प्रमाण और जो इनमें वेद विरुद्ध वचन हैं उनका अप्रमाण करता हूँ।

३. जो पक्षपातरहित न्यायाचरण सत्यभाषणदियुक्त ईष्वराज्ञा, वेदों से अविरुद्ध है उस को 'धर्म' और जो पक्षपातसहित अन्यायाचरण मिथ्याभाषणदि ईश्वरज्ञाभङ्ग वेदविरुद्ध है उसको 'अधर्मा' मानता हूँ।

४. जो इच्छा, द्वेष, सुख और ज्ञानादि गुणयुक्त अल्पज्ञ नित्य है उसी को 'जीव' मानता हूँ।

५. जीव और ईश्वर स्वरूप और वैधर्म्य से भिन्न और व्याप्यव्यापक और साधर्म्य से अभिन्न है अर्थात् जैसे आकाश से मूर्त्तिमान् द्रव्य कभी भिन्न न था, न है, न होगा और न कभी एक था, न है, न

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


होगा इसी प्रकार परमेश्वर और जीव को व्याप्य–व्यापक, उपास्य–उपासक और पिता–पुत्र आदि सम्बन्धयुक्त मानता हूँ।

६. 'अनादि पदार्थ' तीन हैं! एक ईश्वर, द्वितीय जीव तीसरा प्रकृति जगत का कारण, इन्हीं को नित्य भी कहते हैं। जो नित्य पदार्थ हैं उनके गुण, कर्म स्वभाव भी नित्य है।

७. 'प्रवाह से अनादि' जो संयोग से द्रव्य, गुण, कर्म उत्पन होते हैं वे वियोग के पश्चात् नहीं रहते परन्तु जिस से प्रथम संयोग होता है वह सामर्थ्य उन में अनादि है और उस से पुनरपि संयोग होगा तथा वियोग भी, इन तीनों को प्रवाह से अनादि मानता हूँ।

८. 'सृष्टि' उस को कहते हैं जो पृथक् द्रव्यों का ज्ञान युक्तिपूर्वक मेल हो कर नाना रूप बनना ।

९. 'सृष्टि का प्रयोजन' यही है कि जिस में ईश्वर के सृष्टिनिमित्त गुण, कर्म, स्वभाव का साफल्य होना। जैसे किसी ने किसी से पूछा कि नेत्र किस लिए हैं ? उसने कहा देखने के लिए। वैसे ही सृष्टि करने के ईश्वर के सामर्थ्य की सफलता सृष्टि करने में है और जीवों के कर्मों का यथावत् भोग करना आदि भी।

१०. 'सृष्टि सकर्तृक' है। इसका कर्त्ता पूर्वोक्त ईश्वर है। क्योंकि सृष्टि की रचना देखने और जड़ पदार्थ में अपने आप यथायोग्य बाजादि स्वरूप बनने का सामर्थ्य न होने से सृष्टि का 'कर्ता' अवश्य है।

११. 'बन्ध' सनिमित्तक अर्थात् अविधा निमित्त से है। जो–जो पाप कर्म ईश्वर भिन्नोपासना अज्ञानादि सब दुःख फल करने वाले हैं। इसी लिए यह 'बन्ध' है कि जिस की इच्छा नहीं और भोगना पड़ता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


१२. 'मुक्ति' अर्थात् सर्व दुःखों से छूटकर बन्धरहित सर्वव्यापक ईश्वर और उसकी सृष्टि में स्वेच्छा से विचरना, नियत समय पर्यन्त मुक्ति के आन्नद को भोग के पुनः संसार में आना।

१३. 'भक्ति के साधन' ईश्वरोपासना अर्थात् योगाभ्यास, धर्मानुष्ठाण, ब्रह्मचर्य्य से विद्याप्राप्ति, आप्त विद्वानों का संग, सत्यविद्या, सुविचार और पुरुषार्थ आदि हैं।

१४. 'अर्थ' वह है कि जो धर्म ही से प्राप्त किया जाए और जो अधर्म से सिद्ध होता है उस को 'अनर्थ' कहते हैं।

१५. 'काम' वह है कि जो धर्म और अर्थ से प्राप्त किया जाय।

१६. 'वर्णाश्रम' गुण कर्मों की योग्यता से मानता हूँ।

१७. 'राजा' उसी को कहते है जो शुभ गुण, कर्म, स्वभाव से प्रकाशमान, पक्षपात–रहित न्यायधर्म का सेवी, प्रजाओं में पितृवत् वर्ते और उन को पुत्रवत् मान के उन की उन्नति और सुख बढ़ाने में सदा यत्न किया करें।

१८. 'प्रजा' उस को कहते हैं कि जो पवित्र गुण, कर्म, स्वभाव को धारण करके पक्षपातरहित न्याय धर्म के सेवन से राजा और प्रजा की उन्नति चाहती हुई राजविद्रोहरहित राजा के साथ पुत्रवत् बरते।

१९. जो सदा विचार कर असत्य को छोड़ सत्य का ग्रहण करे, अन्यायकारियों को हटावे और न्यायकारियों को बढ़ावे, अपने आत्मा के समान सब का सुख चाहे, सो 'न्यायकारी' है उसको मैं भी ठीक मानता हूँ।

२०. 'देव' विद्वानों को और अविद्वानों को 'असुर' पापियों को 'राक्षस' अनाचारियों को 'पिशाच' मानता हूँ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


२१. उन्हीं विद्वानों, माता, पिता, आचार्य्य, अतिथि, न्यायकारी राजा और धर्मात्मा जन, पतिव्रता स्त्री और स्त्रीव्रत पति का सत्कार करना 'देवपूजा' कहाती है! इससे विपरीत अदेवपूजा, इनकी मूर्तियों को पूज्य और इतर पाषाणादि जड़मूर्तियों की सर्वथा अपूज्य समझता है।

२२. 'शिक्षा' जिस से विद्या, सभ्यता, धर्मात्मता, जितेन्द्रियतादि की बढ़ती होवे और अविद्यादि दोष छूटें उसको शिक्षा कहते हैं।

२३. 'पुराण' जो ब्रह्मादि के बनाये ऐतरेयादि ब्राह्मण पुस्तक हैं उन्हीं को पुराण, इतिहास, कल्प, गाथा और नाराशंसी नाम से मानता हूँ; अन्य भागवतादि को नहीं।

२४. 'तीर्थ' जिससे दुःख सागर से पार उतरें कि जो सत्यभाषण, विद्या, सत्संग, यमादि, योगाभ्यास, पुरुषार्थ विद्यादानादि शुभ कर्म है उसी को तीर्थ समझता हूँ; इतर जल–स्थलादि को नहीं।

२५. 'पुरुषार्थ प्रारब्ध से बड़ा' इस लिए है कि जिससे संचित प्रारब्ध बनते जिसके सुधरने से सब सुधरते और जिसके बिगड़ने से सब बिगड़ते हैं इसी से प्रारब्ध की अपेक्षा पुरुषार्थ बड़ा है।

२६. 'मनुष्य' को सब से यथायोग्य स्वत्मवत् सुख, दुःख, हानि, लाभ में बर्त्तना श्रेष्ठ, अन्यथा बर्त्तना बुरा समझता हूँ।

२७. 'संस्कार' उसको कहते हैं कि जिससे शरीर, मन और आत्मा उत्तम होवे। वह निषेकादि शमशानान्त सोलह प्रकार का है। इसको कर्त्तव्य समझता हूँ और दाह के पश्चात् मृतक के लिए कुछ भी न करना चाहिए।

२८. 'यज्ञ' उसको कहते हैं कि जिसमें विद्वानों का सत्कार यथायोग्य शिल्प अर्थात् रसायन जो कि पदार्थ विद्या उससे उपयोग और

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्यादि शुभगुणों का दान अग्निहोत्रादि जिनसे वायु, वृष्टि, जल, औषधी की पवित्रता करके सब जीवों को सुख पहुँचाना है; उसको उत्तम समझता हूँ।

२९. जैसे 'आर्य्य' श्रेष्ठ और 'दस्यु' दुष्ट मनुष्यों को कहते हैं वैसे ही मै भी मानता हूँ।

३०. 'आर्य्यावर्त्त' देश इस भूमि का नाम इस लिए है कि इस में आदि सृष्टि से आर्य्य लोग निवास करते हैं परन्तु इसकी अवधि उत्तर में हिमालय, दक्षिण में विन्ध्याचल, पश्चिम में अटक और पूर्व में ब्रह्मपुत्रा नदी है। इन चारों के बीच में जितना देश है उसको 'आर्य्यवर्त्त' कहते और जो इसमें सदा रहते हैं उनको भी आर्य कहते हैं।

३१. जो साङ्गोपाङ्ग वेदविद्याओं का अध्यापन, सत्याचार का ग्रहण और मिथ्याचार का त्याग करावे वह 'आचार्य' कहाता है!

३२. 'शिष्य' उसको कहते हैं कि जो सत्य शिक्षा और विद्या को ग्रहण करने योग्य धर्मात्मा, विद्याग्रहण की इच्छा और आचार्य का प्रिय करने वाला है।

३३. 'गुरु' माता, पिता और जो सत्य का ग्रहण करावे और असत्य को छुड़ावे वह भी 'गुरु' कहाता है।

३४. 'पुरोहित' जो यजमान का हितकारी सत्योपदेष्टा होवे।

३५. 'उपाध्याय' जो वेदों का एकदेश वा अङ्गों को पढ़ाता हो।

३६. 'शिष्टाचार' जो धर्माचरणपूर्वक ब्रह्मचर्य से विद्याग्रहण कर प्रत्यक्षादि प्रमाणों से सत्यासत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण असत्य का परित्याग करना है यही शिष्टाचार और जो इसको करता है वह 'शिष्ट' कहाता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३७. 'प्रत्यक्षादि' आठ 'प्रमाणों' को भी मानता हूँ।

३८. 'आप्त' जो यथार्थवक्ता, धर्मात्मा, सबके सुख के लिए प्रयत्न करता है उसी को आप्त कहता हूँ।

३९. 'परीक्षा' पांच प्रकार की है, इसमें से प्रथम जो ईश्वर उसके गुण कर्म स्वभाव और वेदविद्या, दूसरी प्रत्यक्षादि, आठ प्रमाण, तीसरी सृष्टिक्रम, चौथी आप्तों का व्यवहार और पांचवीं आपने आत्मा की पवित्रता विद्या, इन पांच परीक्षाओं से सत्याऽसत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण असत्य का परित्याग करना चाहिए।

४०. 'परोपकार' जिस से सब मनुष्यों के दुराचार दुःख छूटें, श्रेष्ठाचार और सुख बढ़ें उसके करने को परोपकार कहता हूँ!

४१. 'स्वतन्त्र परतन्त्र'—जीव अपने कामों में स्वतन्त्र और कर्मफल भोगने में ईश्वर की व्यवस्था से परतन्त्र, वैसे ही ईश्वर अपने सत्याचार आदि काम करने में स्वतन्त्र है!

४२. 'स्वर्ग' नाम सुख विशेष भोग और उसकी सामग्री की प्राप्ती का है।

४३. 'नरक' जो दुःख विशेष भोग और उसकी सामग्री को प्राप्त होना है।

४४. 'जन्म' जो शरीर धारण कर प्रकट होना सो पूर्व, पर और मध्य भेद से तीनों प्रकार का मानता हूँ।

४५. शरीर के संयोग का नाम 'जन्म' और वियोग मात्र को 'मृत्यु' कहते हैं ।

४६. 'विवाह' जो नियमपूर्वक प्रसिद्धि से अपनी इच्छा करके पाणिग्रहण करना वह 'विवाह' कहाता है।

४७. 'नियोग' विवाह के पश्चात् पति के मर जाने आदि वियोग में अथवा नपुंसकत्वादि स्थिर रोगों में स्त्री व पुरुष आपतकाल में

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


स्ववर्ण व अपने से उत्तम वर्णस्थ स्त्री वा पुरुष के साथ सन्तानोत्पत्ति करना।

४८. 'स्तुति' गुण कीर्तन, श्रवण और ज्ञान होना, इसका फल प्रीति आदि होते हैं।

४९. 'प्रार्थना' अपने सामर्थ्य के उपरान्त ईश्वर के सम्बन्ध से जो विज्ञान आदि प्राप्त होते हैं उन के लिए ईश्वर से याचना करना और इसका फल निरभिमान आदि होता है।

५०. 'उपासना' जैसे ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव पवित्र हैं वैसे अपने करना, ईश्वर को सर्वव्यापक अपने को व्याप्य जान के ईश्वर के समीप हम और हमारे समीप ईश्वर है। ऐसा निश्चय योगाभ्यास से साक्षात करना उपासना कहाती है, इसका फल ज्ञान की उन्नति आदि है।

५१. 'सगुणनिर्गुणस्तुतिप्रार्थनोपासना' जो–जो गुण परमेश्वर में हैं उनसे युक्त और जो–जो गुण नहीं है उनसे पृथक् मान कर प्रशंसा करना सगुणनिर्गुण स्तुति, शुभ गुणों के ग्रहण की ईश्वर से इच्छा और दोष छुड़ानें के लिए परमात्मा को सहाय चाहना सगुण निर्गुण प्रार्थना और सब गुणों से सहित सब दोषों से रहित परमेश्वर को मान कर अपने आत्मा को उसके और उसकी आज्ञा के अर्पण कर देना सगुणनिर्गुण उपासना कहाती है।

ये संक्षेप में स्वसिद्धान्त दिखला दिए हैं। इनकी विशेष व्याख्या 'सत्यार्थप्रकाश' के प्रकरण–प्रकरण में है तथा ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका आदि ग्रन्थों में भी लिखी है अर्थात् जो–जो बात सब के सामने माननीय है उसको मानता अर्थात् जैसे सत्य बोलना सबके सामने अच्छा और मिथ्या बोलना बुरा है; ऐसे सिद्धान्तों को स्वीकार करता हूँ और जो मतमतान्तर के परस्पर विरुद्ध झगड़े हैं उनको मैं पसन्द नही करता क्योंकि इन्हीं

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


मतवालों ने अपने मतों का प्रचार कर मनुष्यों को फंसा के परस्पर शत्रु बना दिये हैं । इस बात को काट सर्व सत्य का प्रचार कर सबको ऐक्यमत में करा द्वेष छुड़ा परस्पर में दृढ़ प्रीतियुक्त करा के सब से सबको सुख लाभ पहुँचाने के लिए मेरा प्रयत्न और अभिप्राय है। सर्वशक्तिमान् परमात्मा की कृपा सहाय और आप्तजनों की सहानुभूति से 'यह सिद्धान्त सर्वत्र भूगोल में शीघ्र प्रवृत्त हो जाये' जिससे सब लोग सहज से धम्मार्थ, काम, मोक्ष की सिद्धि करके सदा उन्नत और आन्नदित होते रहें । यही मेरे मुख्य प्रयोजन है।

अलमतिविस्तरेण बुद्धिमद्वर्य्येषु।

ओ३म्। शन्नो मित्रः शं वरुणाः। शन्नो भवत्वर्य्यमा। शन्न इन्द्रो बृहस्पतिः। शन्नो विष्णुरुरुक्रमः।। नमो ब्रह्मणे। नमस्ते वायो। त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्मावादिषम्। ऋतमवादिषम्। सत्यमवादिषम्। तन्मामावीत्। तद्वक्तारमावीत् । आवीन्माम्। आवीद्वक्तारम् ओ३म शान्तिः शान्तिः शान्ति।।

* * * * *

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# महर्षि के प्रति श्रद्धा–सुमन

* स्वामी दयानन्द जी महाराज आधुनिक युग के सबसे बड़े विद्वान और समाज सुधारक थे।

—लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

* आर्य समाज के नियम उदार हैं । मैं ऋषि दयानन्द को संसार के सभी राजनैतिक नेताओं में ऊंचा स्थान देता हूं।

—नेता जी सुभाषचंद्र बोस

* ऋषि दयानन्द को मैं देश भक्तों में पूज्य, ब्रह्मचारियों में पूज्य और हिन्दु जाति की सेवा करने वालों में सबसे बड़ा मानता हूँ।

—पंडित मदन मोहन मालवीय

* आर्य समाज हिन्दु महासभा और काँग्रेस दोनों की माता है। यदि ऋषि दयानन्द अपने सत्यार्थ प्रकाश में स्वराज्य शब्द न लिखते तो आज स्वराज्य की पुकार सुनाई न देती। ऋषि ने ही सच्चे स्वराज्य का आदर्श पेश किया था।

—स्वातंत्र्यवीर सावरकर

* महात्मा मुंशी राम, लाला लाजपत राय और स्वामी दयानन्द यही मेरे आराध्य देव हैं। इन में भी प्रथम आराध्य देव स्वामी दयानंद है जिन्होंने वेदों का व्यवहारिक और राष्ट्रीय महत्व सर्वप्रथम राष्ट्र के सामने रखा।

—वेदमूर्ति पंः सातवलेकरजी

* आधुनिक युग में जितने महान व्यक्ति भारत में हुए उनमें सबसे बड़े व्यक्ति दयानन्द थे। आज जितना जीवन भारत में दिखता है, सबके जन्मदाता दयानन्द थे।

—रोम्या रोलां—सुप्रसिद्ध फ्रैंच साहित्यकार

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


* यदि महात्मा गांधी राष्ट्रपिता हैं तो महर्षि दयानन्द निःसन्देह राष्ट्र पितामह हैं।

—अनन्त शय्यम अय्यंगर—भूतपूर्व अध्यक्ष लोकसभा

* मैंने सार्वजनिक सेवा के सारे पाठ आर्य समाज से सीखे हैं। ऋषि दयानन्द मेरे गुरू हैं और धर्मपिता हैं तथा आर्य समाज मेरी माता है। गुरुदेव रचित सत्यार्थ प्रकाश मेरे जीवन में सूर्य के समान प्रकाश देने वाला है।

—लाला लाजपत राय

* हिन्दु जाति के ठण्डे रगों में, गर्म खून का संचार करने वाला यह ग्रन्थ अमर रहे। सत्यार्थ प्रकाश की विद्यामानता में कोई भी मतावलम्बी अपने मत की शेखी नहीं मार सकता।

—स्वातंत्र्यवीर सावरकर

* महर्षि दयानन्द भारत के आधुनिक ऋषियों में, सुधारकों में और श्रेष्ठ पुरुषों में एक थे। उनके जीवन का प्रभाव भारत पर बहुत पड़ा है।

—महात्मा गांधी

* मैं आधुनिक भारत के मार्ग दर्शक उस दयानन्द को आदरपूर्वक श्रद्धांजली देता हूँ जिसने देश की पतितावस्था में सीधे या सच्चे मार्ग का दर्शन कराया तथा जिसके मन ने भारतीय जीवन के सब अंगों को प्रदीप्त कर दिया।

—रविन्द्रनाथ टैगोर

* जब भारत के उत्थान का इतिहास लिखा जाएगा तो नंगे फकीर दयानन्द सरस्वती को उच्चासन पर बिठाया जाएगा।

—यदुनाथ सरकार

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



* स्वामी दयानन्द ही पहले व्यक्ति थे जिन्होंने हिन्दुस्तान हिन्दुस्तानियों के लिए का नारा लगाया था। आर्य समाज के लिए मेरे हृदय में शुभ इच्छाएँ हैं और उस महापुरुष के लिए जिनका आप आर्य आदर करते हैं, मेरे हृदय में सच्ची पूजा की भावना है।

—श्रीमती एनी बेनेन्ट

* स्वामी दयानन्द निःसन्देह देवता तुल्य थे। वे इतने विद्वान और अच्छे आदमी थे कि वे प्रत्येक धर्म के अनुयायियों के लिए सम्मान पात्र थे। उनके समान व्यक्ति समूचे भारत में इस समय नहीं मिल सकता।

—सर सय्यद अहमद खां

* स्वामी दयानन्द सरस्वती ने हिन्दु धर्म के सुधार का बड़ा कार्य किया और जहाँ तक समाज सुधार का सम्बन्ध है वह बड़े उदार हृदय थे।

—मैक्समूल्लर

* ऋषि के अखण्ड ब्रह्मचर्य, सत्यसंग्राम और घोर तपस्वियों के लिए अपने हृदय में पूज्य भावों से प्रेरित होकर मैं उनकी वन्दना करता हूँ। ऋषि को शक्तिसुत अर्थात कर्मवीर योद्धा समझकर उनका आदर करता हूँ। उनका जीवन राष्ट्र निर्माण के लिए स्फूर्तिदायक, बलदायक और माननीय है। दयानन्द उत्कृष्ट देश भक्त थे। अतः मैं उन्हें राष्ट्रवीर समझ कर उनकी वन्दना करता हूँ।

—साधु वासवानी

* वह दिव्य ज्ञान का सच्चा सैनिक, विश्व को प्रेम की शरण में लाने वाला योद्धा और मनुष्य व संस्थाओं का शिल्पी तथा प्रकृति द्वारा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



आत्मा के मार्ग में उपस्थित की जाने वाली बाधाओं का वीर विजेता था। वह स्वयं दृढ़ चट्टान थे। उनमें दृढ़ शक्ति थी कि चट्टान पर धन चलाकर पदार्थों को सुदृढ़ व सुडौल बना सके।

वेदों के भाष्य के बारे में इस बात का श्रेय दयानन्द को ही प्राप्त होगा कि उसने सर्व प्रथम वेदों की व्याख्या के लिए निर्दोष मार्ग का आविष्कार किया था। जंगली लोगों की रचना कही जाने वाली पुस्तक के भीतर उसके धर्म पुस्तक होने का वास्तविक अनुभव उन्होंने ही किया था। ऋषि दयानन्द ने उन द्वारों की कुंजी प्राप्त की है जो युगों से बन्द थे और उसने पटे हुए झरनों का मुख खोल दिया।

—योगी अरविंद

* मैं क्या था, क्या बन गया और क्या हूँ, यह सब गुरु दयानन्द की कृपा का ही परिणाम है। मैं भगवान से प्रार्थना कर रहा हूँ कि मुझे उसका सच्चा शिष्य बनने की शक्ति प्रदान करें।

—स्वामी श्रद्धानंद

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# नित्य पाठ गुटका

## पौड़ी १

## ओमकार अस्तुती

ओमकार निरलेप निरंजन, निराकार प्रभु दुःख भंजन।
सतनाम हर बेले जाप, तेरे दूर हटन सब पाप।
अमृत बेले वेद विचार, ज्ञानी पढ़–पढ़ होवन पार।
फल दाता कर्मा दा आपे, अंदर बाहर आप विआपे।
वेद वार सतगुरु दी बाणी, आदि सृष्टि में बखियानी।
ओसे दा जग विच पसारा, हस्ती कीट पतंग उसारा।
भिन्न भिन्न सभ जीव बनाए, नदी बृख पहाड़ रचाए।
रंग बिरंगे फुल्ल बनाए, जंगल फलां नाल सजाए।
रचणे हारा साहिब एक, उस साहिब दे नाम अनेक।
सभदा ओह कल्याण विचारे, इस गुण ते शिवनाम पुकारे।
सभ देवाँ दा देव कहाया, महाँदेव इयों नाम धराया।
संगत दा प्रभु आप महेश, इस बिध उसदा नाम गणेश।
पाप पुण दा देखन हारा, मरे न जन्मे रहे न्यारा।
दर्शन करे प्रीत जो साजे, घट–घट में प्रभु आप विराजे।
नित्त पाठ जो पढ़े पढ़ावे, निश्चय भवसागर तर जावे।
नित्य पाठ जो सुणे सुणावे, करनी करे वह मुक्ति पावे।
करनी करे सो दर्शन पावे, बिन करनी प्रभु नजर न आवे।
धर्मवीर दा सतगुरु प्यारा, हाजर नाजर देखन हारा।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## पौड़ी २

# सृष्टि उत्पत्ति

ओमकार दा सभी जहर, सारी थाई है भरपूर।
चमकण ओमकार से तारे, दिसदे हैं जो न्यारे न्यारे।
ओमकार से होया चन्द, तारों से चमके दह वन्द।
सूरज ओमकार दी जोत, सारे जग उजियारा होत।
ओमकार ते दुनियां होई, बहु जूनी गिन सके न कोई।
ओमकार पुरुषां दा करता, ओम का दुखां दा हरता।
ओमकार दा सकल पसारा, दुनियां में जो जाहर सारा।
धरती अन्दर जो भरपूर, अखां कीलों भी ओ दूर।
ओह भी रचना ओमकार दी, समझ ज्ञानी बात सार दी।
ओमकारं सारां दा सार, ओमकार ते बेड़ा पार।
तेरा ओम नाम है प्यारे, कैसे गुण गांवां में सारे।
ओमकार से जो लिव लावे, वह नर 'धर्म वीर, तर जावे।

## पौड़ी ३

# दया दा वर्णन

दुनियां है प्रभु बाग लगाया, बूटा सरइक जीव उगाया।
बूटियाँ नूँ जल आप पुचावे, आपे रकखे आप सुकावे।
सतगुरु दा एक बाग निराला, सभ दीकरे वही प्रतिपाला।
महिमां उसदी लखी न जावे, ऋषीमुनी कोई पार ना पावे।
सतगुरु बागे नर जो आवे, देख बाग सतगुरु गुण गावे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



बुटिआँ नाल प्यार बधावे, दया धर्म दा पाणी पावे।
पत्तें फूल न टहणी तोड़े, न कोई बूटा तोड़ मरोड़ें।
जीवां उत्ते दया कमावे, मदरा मास न पीवे खावे।
जीवाँ ते जो छुरी चलावे, धार नरक में जा दुःख पावे।
प्रेमनाल पीतम गुण गावे, धर्मवीर मुक्ति-पद पावे।

पौड़ी ४

## सच्चाई दा वर्णन

सच्च विहार करे सभ कोइ, सच्च बराबर तप न कोई।
नित्त स्नान करे सत बोले, नाम ध्यावे घट न तोले।
दुनियां में एह पाप है भारे, पासंग डंडी कदे न मारे।
सच्चा साहिब दे मन भावे, सच्चा सदा सदा जय पावे।
सच्चा जग में पावे मान, सच्चे दा गुण विच्च जहान।
नाल सच्चाई मन बो निर्मल, हर चरणी रहे, रहे न निर्बल।
नाल सच्चाई बुद्ध चित धोवे, अंदर बाहर चानण होवे।
घट में ही फिर दर्शन पावे, 'धर्मवीर' गुण हरदम गावे।

पौड़ी ५

## धीरज दा वर्णन

धीरज को जो मन में धारे, मन जीते वो कभी न हारे।
बिपता में जो धीरज छोड़ें, सुखों से मुंह अपना मोड़े।
चित्त करार न पावे मूल, पैर पैर पर जावे भूल।
धीरज को जो करले मीत, पंजे बरी लेवे जीत।
नित्त कर्म को न बिसरावे, वेद पढ़े ते होम रचा वे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


प्रीतम नाम प्रेम रझावे, मन जीते वह मुक्ति पावे।
धीरज राखे जो जो प्राणी, 'धर्मवीर' वह पुरुष ज्ञानी।

पौड़ी ६

## क्षमा दा वर्णन

क्षमा कटारी कमरे लाओ, काम क्रोध नूँ मार मुकाओ।
जो नर चंचल ते अभिमानी, साहिब कोलौं दूर तमामी।
मंदे बोल न बोले कोई, नरकां दे विच बासा होई।
साहिब दा है प्यारा सोई, जिहदी नाल क्षमा देह धोई।
जिसने कीती क्षमा प्यारी, उसने जीती दुनियां सारी।
सच्चे 'धर्मवीर' दे बोल क्षमा उधार मिले न मोल।

पौड़ी ७

## काम दा वृत्तान्त

कामी पुरुष सदा दुःख पावे, रहे उदासी मन घरावे।
हरं वेले ही पाप कमावे, पापाँ कोलों न शरमावे।
दयाभाव न मन में लावे, साहिब–कोलों न डर खावे।
जे कोई ऐसी करनी करदा लख चुरासी जादुख भरदा।
जिसने कामदेव को जीता, जीवन सुफल उसी ने कीता।
एहो 'धर्मवीर' दा कहणा, हाज़र विच हजूरी रहणा।

पौड़ी ८

## वेदां दी महिमा

आदि सृष्टी में करतार, कीते चार वेद सच्यार।
चार पदार्थ एह की जाण, चारे आखन वेद बखान।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पहले धर्म ते अर्थ कमाओ, काम करो फिर मुक्ति पाओ।
चारे युग चारे हैं वेद, चार युगाँ दा आखण भेद।
दस्सन चारे वेद ज्ञान, समझे ज्ञानी सुघड़ सुजान।
कैंहदे खोल खोल विज्ञान, जिसनू जाणे पुरुष महान।
विद्या सारी इस में जाण, बीज रूप सगल पछाण।
वेद शास्तर पढ़ो पढ़ावों, सच्चे आर्य वीर कहावो।
ज्ञानी जन जो करन विचार, भवसागर से उतरण पार।
'धर्मवीर' जो वेद बिचारे, आप तरे औरो को तारे।

पौढ़ी ९

## ज्ञान अते कर्म दी वडियाई

पहिले ज्ञान प्राप्त करना, हरदम ज्ञान हरि दा धरना।
दूजे चंगे कर्म कमाओ, बुरे कर्म तों चित्त हटाओ।
कल्ले ज्ञान बिना न तरदा, कल्ला कर्म पार न करदा।
ज्ञान कर्म दा मेल मिलाओ, ऐसे भवसागर तर जाओ।
देवां तैनूं इक दृष्टांत, सुण के करलै तूं मन शाँत।
एक वणी दो प्राणी रहंदे, इक अन्हा इक लंगड़ा कैंहदे।
एक समय अग्निवण लागी, दौड़े साधू सन्त बैरागी।
बिन नेत्र भागा न जाए, अन्धा रोवे शोर मचाए।
बिन पग कैसे बचूं विधाता, लंगड़ा रो रो था कुरलाता।
ओड़क अन्हे बात सुनाई, इक्क सोच मैं सोची भाई।
तैनू चक्काँ सिर ते चांवाँ, तूं देखे मैं दौड़िया जावां।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



नींवा उच्चा तूं बतलावे, इस विध दोनों ही बच जावें।
इस भांति पुरुषार्थ कीना, दोनो बचे होया फिर जीना।
एस कहणी दा एह सार, ज्ञान कर्म मिल होवे पार।
ज्ञान बिना है अन्हा प्राणी, शुभ करनी विन लंगा जानी।
मेल ज्ञान कर्म दा होवे, तदां प्राप्त मुक्ति होवे।
समझो सारा सारा आसार, एसे मिलदा मोक्ष द्वार।
करदे ज्ञान कर्म से प्यार, हुँदे 'धर्मवीर' वह पार।

पौड़ी १०

## सत्संग दी महिमा

संगत सतजनों की करना, सच्चे बचन हिये में धरना।
कपटी साधु हैं बहु भाँति, जग में पाप करें दिन राती।
संगत एसो की न करना, लैणा एक हरि दी शरना।
विरलां सच्चा साधू आवे, विरला सच्चा राह बतलावे।
सुनो ज्ञानी के जो बोल, लैणा ज्ञान तराजू तोल।
जो जो साहिब दे दर आवे, पारब्रह्म के दर्शन पावे।
प्रभू अथाह अगम अपार, हिरदे माहे करो विचार।
विरला ही को साजे भगती, विरला को ही पावे मुक्ती।
जेकर भवसागर है तरना, 'धर्मवीर' सदा सतसंग करना।

पौड़ी ११

## सतगुरु दे दर्शन

जैसे फुल्लां में है बास, ऐसे सतगुरु करे निवास।
जैसे घी दूध के मांही, सतगुरु माहिमा हर हर थाई ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सूरज नूर तेरे दा सारे, हर हर थाई चमकां मारे।
विरला रिड़के दहीं ज्ञान, विरला करे ईश का ध्यान।
दोहणी अपने कन्न बनाके, चोवो दूध हरी गुण जाके।
मन दे चूल्हे फेर चढ़ाओ, हेठाँ इन्द्री विषय जलाओ।
सतसंग दा दही लगाओ, ऐसे दूध ज्ञान जमाओ।
कर्मकाण्ड दी पड़क मधाणी, ऐसे रिड़को दूध ज्ञानी।
मक्खन ब्रह्मरूप तब पाओ, ज्ञान अग्नि में उसे तपाओ।
जल जावे सभ विषे विकार, एको ब्रह्म रहे करतार।
ऐसे घ़ट में, दर्शन पाओ, 'धर्मवीर' सागर तर जाओ।

पौड़ी १२

## सतगुरु की अपार महिमा

कथनी कथ कथ महिमा हारे, पार न पाया तेरा प्यारे।
दुनियां दे सब कागज स्याही, लिखे लेख ते मनदी लाही।
लिखे लेखनी कौन विचारी, जीभा गा गा के गुण हारी।
धन्न धन्न सतगुर बेअंत, तेरा किसे ना पाया अंत।
तूही सच्चा साहिब प्यारा, तेरा कौन करें विस्तारा।
तेरा हर हर थाई शोर, गावण तैनू मोर चकोर।
जीअ जंत दुनियां दे सारे, गावण तेरी महिमा सारे।
कोटां कोट रिखी रिखीश्वर, कोटां कोटतपी तपीश्वर।
कोटां कोट जो देव कहाए, अंत बेअंत किहा मुड़ आए।
'धर्मवीर' तेरा विस्तार; मैं की दस्सां दीन विचार।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पौड़ी १३

## गृहस्थी पुरुषां दे कर्त्तव्य

अमृत बेले उठ ज्ञानी, दातन कुरला करके प्राणी।
दो वेले गृहस्थ गुर शरणा, संध्या दा ना त्यागन करना।
छोटे बच्चे घर दी नार, सतगुरु से मिल करो प्यार।
वेदपाठ फिर मिल के करना, इसमें भूल कदी न करना।
करनी चंगी करो कराओ, एक प्रभु से ध्यान लगाओ।
जेहड़ा इक प्रभु नूं सेवे, चार पदारथ ओह पा लेवे।
जेहड़ा सतगुर से मुंह मोड़े, पत्थर इट्टाँ ते मुँह जोड़ें।
एह हैं भारी बड़ा कसूर, हर चरणा ते है ओह दूर।
जेहड़ा पूजे रुख ते पाणी, पापी है ओह मूढ़ अज्ञानी।
सतगुर नाल करे जो प्यार, भवसागर ते उतरे पार।
लेवे जन्म न बारम्बारा, जन्म मरण ते है ओह न्यारा।
महिमा ओम नामदी जो गावे, सतगुर प्यारा मूक्ती पावे।
मन को बाँध नाम के खूंटे, फन्दा लख चौरासी छूटे।
'धर्मवीर' कर ऐसी करनी, तरजा जत रूप बैतरनी।

पौड़ी १४

## नारियां दे धर्म अते कर्त्तव्य

धर्म कर्म नारी दे जाण, उठ सवेरे करें स्नान।
बैठ एकांत नाम ध्यावे, हर चरणों में ध्यान लगावे।
घर में प्रेम करे गुण गावे करनी करके कंत रिझावे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


धीआं पुत्ताँ पास बिठावे, सत उपदेश करें समझावे।
नित्त बड़ों की सेवा करना, चंचल भाव कदी न करना।
विद्या जेहड़ी पढ़ो पढ़ावो, रक्खो याद न भूल भुलावो।
नाल कंत दे बुरा न बोले, घुण्डी दूज भाव द खोले।
पर घर पर थाई न जावे, चरण पती दे ध्यान लगावे।
जिस घर में हो ऐसी नार, उस घर में सुख अपरंपार।
नारी दा जो करे निरादर, दुख भोगे न पावे आदर।
सास ससुर दी सेवा करना, अगों उजर कदी न करना ।
घर में जितनी हैं सभ नार, आपस में मिल करो प्यार।
तीरथ सास ससुर घर जान समझे नारी सुघड़ सुजान।
सेवा जल में जो को न्हावे, मन चाहा नारी फल पावे।
द्राणी नाले होर जठाणी, सेवा सभदी कर मनमानी।
कलह लड़ाई कदी न करना, सिख मेरी एह हिरदे धरना।
जित्थे कलह लड़ाई होवे, घाटा विच्च मनुक्खाँ होवे।
लछमी ओथे करे न वास, तत्तकाल ही होवे नास।
जिस घर में हो मेल मिलाप, ओथे सतगुर वसदा आप।
'धर्मवीर' ओह स्वर्ग समान, जो घर ऐसा उच्च महान।

पौड़ी १५

## विधवा स्त्रियां अते पुरुषां दे कर्त्तव्य

जेहड़ी होवे विधवा नार, सतगुर सेतो करे प्यार।
सतगुर वांझ न उसदा कोई, दुनियां दे विच्च सच्चा सोई।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


विद्या पढ़े ज्ञान वधावे, नाल हरि दे लौ लगावे।
छोटीआं कुड़ीआँ बैठ पढ़ावे दान ज्ञान दा करे करावे।
विद्या जेहा होर न दान, ऐसा कह गये पुरुष महान।
इन्द्रीयां नूं काबू करना. अलख निरंजन दी गैह शरना।
चंगे पुस्तक पढ़ों पढ़ाओ,. मन को रोको नहीं डुलाओ।
संगत चंगी में ही रहणा, एहो सतपुरषां दा कहणा।
सतगुर दी करनी नूं सैहणा, मंदी संगत विच्च न बैहणा।
छिप छिप के न पाप कमावे, इसतो चंगी विआह करावे।
पुरुषा दे भी एहो नेम, सतगुर सेती करें प्रेम।
मंदी अक्ख किसे न ताके, जत ताखे न मंदा भाके।
साहिब नाल ध्यान वधावे, मन अपने पर काबू पावे।
सुपने में भी पाप न करना, जे तू भवसागर है तरना।
जेतू लोड़ें खास हजूरी, मन में राखो सबर सबूरी।
जो कोई हर से करे प्यार, 'धर्मवीर' हो सुख अपार।

पौड़ी १६

## प्रणव दा जाप

दुनियां में जो सगल ज्ञान, सभदा वेद खजाना जान।
वेदो में गायत्री सार, बैठ ज्ञान करन विचार।
सार गायत्री है ओमकार, प्रणव दा जाप करे सो पार।
वेद पढ़े ब्रह्मा गुण गावे, ओमकार मुखसार बतावे।
बीन बजावे रिखीं कुमारी, गावे ओमकार मिल सारी।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



मोर पपीहा होर चकोर, कुमरी हरीयल करकर शोर।
बोलो में बोलें ओमकार, साहिब सेती करें प्यार।
सिख्या नित्त मनुक्खाँ देवण, नाम ओमकार दा लेवण।
देह रूपी घर तेरा प्राणी, ओमकार दिन सूना जाणी।
जैसी दीपक बिन उजियारा, ओमकार बिन ज़ीआ तुमारा।
ओमकार सार जिस जानी, 'धर्मवीर ओह पुरुख ज्ञानी।

पौड़ी १७

## जाति दा वर्णन

ओमकार जग में हर थाई, ओमकार हिरदय के मांहि।
खोजी खोज करे पा लेवे, भगतां नूं ओह दर्शन देवे।
ओमकार करनी दा प्यारा, करनी से ही पार उतारा।
जात जन्म न साहिब लोड़े, मान घमंडी दा ओह तोड़े।
रावण समझी जात वडेंरी, बैठा कर्मां ते मुंह फेरी।
चोरी पर तिरिया नूं लाया, साहिब कोलों न डर खाया।
आखर तोड़ा सभी घमंड, लंका दा न पाया पंड।
राजा कंस जहे हंकारी, तोड़ा मान दिये सभ मारी।
हरणाकुश खुद प्रभु संदावे, सभ ते अपना नाम जपावे।
परजा नूं ओह नित्त सतावे, सतगुर पासों न डर खावे।
आखर ओस सच्चे करतार, तोड़ा सभी खुदी दा तार।
इक सिंघ ते पेट चराया, हरनाकुश नूं मार मुकाया।
तुझ़ से बेमुख जो मुंह फेरे, उस.पापी दे नरकीं डेरे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



मान छोड़ जो करनी करदा, दिल से हो साहिब दा बरदा।
'धर्मवीर ओह सच्चा वीर, तोड़े काल रूप जंजीर'।

पौड़ी १५

## शुभ करनी दा फल

ओमकार भगतां दा प्यारा, ओमकार ही तारन हारा।
करनी ते ही भगत सदावे, करनी ते मोखंतर पावे।
बालमीक करनी बतलावें, करनी करो साफ फर्मावे।
शुभ करनी से चित्त लगाओ, मंदी करनी पैर न पाओ।
करनी चंगी दादू तरिआ, भवसागर ते पार उतरिआ।
करनी चंगी करु रमदास, सदा सदा साहिब दे पास।
करके करनी भगत कबीर, जा पहुँचा साहिब दे तीर।
अमरदास करनी कर प्यारी, खुदी तकब्बर की जड़ मारी।
देख कर्म उस तार हारे, नानकदेव दिये उस तारे।
मीरांबाई हर की प्यारी, शुभ कर्मा ने पार उतारी।
दयानन्द बड़ करनी कीनी, मुक्ति दी उस पदवी लीनी।
जे कोई रखे जात्त बडेरी, कर्मां ते मुँह लेवे फेरी।
उसदी अकले पिआ फतूर, ओह पुरुष साहिब ते दूर।
भगती लौ जिस लागी होवे, बड़ कर्मी बड़भागी होवे
जेहड़ा चंगी करनी करदा, भवसागर ओह प्राणी तरदा।
जाती हरी न रीझन हारा, धर्मवीर कर कंर्म प्यारा।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## पौड़ी १९

# परउपकार

पर उपकार सुखां दी खान, पर उपकारी पुरुष महान।
परउपकारी जो नर होवे, उसदा मान जगत में होवे।
जीवन जानो पर उपकार, खुदगरजी है दुःख अपार।
रूखां कोलों सिख्या पावीं, सुख देवीं ते दुःख उठावीं।
गन्ना बेलने विच्च घुमाया, आप गया गुड़ राब दिलया।
लोकीं रूक्खी इट्टाँ मारन, फल मिट्ठे रूक्ख अपने डारन।
फुल्ला नूं लै भांडे पाया, भांडा चुल्हे चक्क चढ़ाया।
फुल्ला अपना आप गंवाया, पुरुषाँ अतर गुलाब पुचाया।
पानी अपना आप गंवावे, लोकाँदी ओह प्यास बुझावे।
हत्थ हथोड़ा छैणी चाया, जाके कट्ट पहाड़ गिराया।
होई पहाड़ी तौर बतौर, दित्ते ह़ीरे लाल बिलौर।
धरती दी जां चीरी छाती, सोना चाँदी दे बहु भांती।
एहो पुरुष जनम दी सार, सदा सदा कर पर उपकार।
करनी सभ दे नाल भलाई, सत पुरुषां दी जान कमाई।
धन दौलत जे साहिब देवे, दान करे जस सन्तां लेवे।
भुखिआं अन्न धिहाइयां पाणी, नंगिआँ कपड़े देवे प्राणी।
गऊ ब्राह्मण जस कन्या लेवे, रोगियां होर अनाथां देवे।
विद्या में भी देबे दान सभते बड़ा दान यह जान।
धन दौलत पा करे न दान बैठा सप्प खजाने जान।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



आप ना खावे किसे न देवे, मरने पर कोई तीज़ा लेवे।
कर कंजूसी माया जोड़ी, अखिर नाल गई न कौड़ी।
ऐसा खुदगरजी नर जोई, धुर दरगाह न उसदी ढोई।
उसते चगे पत्थर पानी, विरला जाने कोई प्राणी।
'धर्मवीर' कर परउपकार, चोला मिले न बारम्बार।

पौड़ी १८

## सतगुर दे मिलन दी रीत

ना हर मिलदा मूँड मुंडाए, ना हर मिलदा केस वधाए।
ना हर मिलदा रंग रंगाए, ना हर मिलदा भस्म रमाए।
ना हर मिलदा अलख जगाए, न हर मिलदा तपे तपाए।
सतगुर मिलने दी एह रीत, घर के ध्यान सुनो तुम मीत।
सतगुर नाम कड़ा मन पाओ, सतसंगत किरपान लगाओ।
जप की कच्छसे अंग सजाओ, प्रीति प्रेम के केस रखाओ।
सत का कंघा करो कराओ, अन्दर खोज करो हर पाओ।
ऐसी करनी करो कराओ, 'धर्मवीर' हर दर्शन पाओ।

पौड़ी २१

## सतगुर दी वाणी

आदि ग्रन्थ वेद है भाई, सगल ग्रन्थां महिमा गाई।
वेद नाम कागज दा नाँहो, न है वेद स्याही मांही।
वेदों में जो भरा ज्ञान, ओसे नू तू वेद पछान।
सत्त नाम पुरुषां दा कर्ता, निर्भय सदा सदा दुख हरता।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



उसदे आग्गे सीस झुकाओ, शुभ करनी दे फूल चढ़ाओ।
वेद मुताबिक करनी करना, मंदी करमी पैर न धरना।
वेदाँ नाल मिले जो पोथी, मन्नो ओह सच्चाई धोती।
नाल वेद जो मिले न पोथी, जानो ओह सच्चाईयों थोथी।
लोकां कई ग्रन्थ बनाये, आखण साहिब ने फरमाये।
जाणो वेद साहिब दी बाणी, होर ग्रन्थ सभी मनमानी।
जै तैनू साहिब दी लोड़, आदि ग्रन्थ वेद मुँह जोड़।
नित्त पाठ को ना विसराओ, अन्दर दीपक ज्ञान जलाओ।
ज्ञान उजाला अन्दर होवे, शुभ करनी मल तेरा धोवे।
आत्मं ज्ञान बढ़े जब डेरा, सतगुर करले अपना चेरा।
गोदी लेकर करें प्यार, धर्मवीर सच्चे करतार।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



ओ३म्

# बारां माह मोती राम

चेत्र–चेतर चित विच समझ प्यारे दुनियां कूड़ा भाना ई ।
जिन्हां नाल तूं लाई दोस्ती ओनां भी चले जाना ई ।
सभ दे सिर ते काल कूकदा क्या रंक क्या राना ई ।
मोतीराम तूं समझ प्यारे जग विच रहन निमाना ई ।
वैसाख–वैसाख विसारियो नाम साई दा आकड़ आकड़ चलना ए तूं।
खाएं खुराकां पहन पुशाकां जम दा बकरा पलना एं तूं।
चार दिहाड़े रैन बसेरा महल माड़ियां मलना एं तूं।
मोतीराम तूं समझ प्यारे अन्त खाक विच रलना एं तूं।
जेठ–जेठ माया दा मान न करिए एह है काग बनेरे दा।
पल विच आवे छिन विच जावे सैर करे चुफेरे दा।
इक मन हो के नाम न जपिओ क्या नफा दिल तेरे दा।
मोतीराम तूं समझ प्यारे अन्तकाल विच जम घेरे गा।
हाड़–हाड़ होश कर दिल विच प्यारे काल नगारा वजदा ई।
ए दुनियां भांडे दी न्याई जो घड़िया सो भजदा ई।
वेख वेख दुनियां दे मेले अजे न मूरख रजदा ई।
मोतीराम तूं समझ प्यारे काल नगारा वजदा ई।
सावन–सावन शौक माया दा करना एं साई दा शौक न कीतो ई।
जिस साहिब तैनूं पैदा कीता उसदा नांम न लीतो ई।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


अपने हत्थी जान बुझ के जहर प्याला पीतो ई।
मोतीराम तूं समझ प्यारे जन्म अकारथ कीतो ई।

भाद्रों–भाद्रों भार पिया सिर तेरे किस विध पार उतरेंगा ।
डूंगी नदी कहर दियां लहरां कंडे बैठ पुकारेंगा।
अन्त समे तेरा कोई न बेली रो रो आहां मारेंगा।
मोतीराम तूं समझ प्यारे जित के बाजी हारेंगा।

असू–असू ओकड़ चलना प्यारे दम दा रैन बसेरा ई।
सब दा वास जंगल विच होसी जो कोई भला भलेरा ई।
जिस साईं तैनू पैदा कीता सोई ठाकर तेरा ई।
मोतीराम तूं समझ प्यारे सिर ते भार घनेरा ई।

कत्तक–कत्तक किस्मत भली ओना दी जिनां नाम जप लीता ई।
सोई अमर जगत विच होए जिनां भजन ओसदा कीता ई।
ओम् नाम दा प्रेम प्याला भर के कदी न पीता ई।
मोतीराम तूं समझ प्यारे जनम अकारथ कीता ई।

मघर–मघर मगन होइओं विच दिल दे आप खुदा कहावेंगा।
सब दे सिर ते करें तदबीरां, सब पर हुकम चलावेंगा।
ओथे तेरा कोई न बेली रो रो हाल वंजावेगा।
मोतीराम तूं समझ प्यारे राह अवल्ले जावेंगा।

पोह–प्यारा याद न कीता कीती गल नकारी तूं।
ऐसा नाम अमोलक प्रभ का लीता नां इक वारी तूं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


बार बार समझा रहे तैनू इक न जरा विचारी तूं।
मोतीराम तूं समझ प्यारे जद कद करें खुवारी तूं।
माघ—माघ मान न करिए बन्दे नाल गरीबी दे रहना ई।
जो कोई आखे गल वधीकी ओ वी सिर ते सहना ई।
उच्चे हो के मूल न बईए बन्दे नीवें हो के बहिना ई।
मोतीराम तूं समझ प्यारे बाजी नूं जित लैना ई।
फगन—फगन पकड़िआ जदों जमां ने पेश न चल्ले कोई तेरी।
ओम् भुलाया क्या फल पाया पछतावेंगा फेरी ।
बार—बार समझा रहे तैंनू साहिब दे दर हो ढेरी।
मोतीराम तूं समझ प्यारे अन्त काल तैनूं आ घेरी।

## विश्व—मंगल—कामना

सर्वे भवन्तु सुखिनः
सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु
मा कश्चित् दुःखभाग् भवेत् ।

अर्थ—हे प्रभो ! आप हम सब प्राणियों पर ऐसी कृपा करो कि प्राणिमात्र सुखी होवें। रोग, दुःख, भय, पीड़ा से रहित होवें। अपने जीवनों को कल्याणमय अनुभव करें। और कोई भी प्राणी किसी भी प्रकार के दुःख से दुःखी न होवे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.